मीनू मसानीः एक उदारवादी का जन्म

एस.वी. राजू

8 जून 1959 के अखबारों में प्रकाशित एक रिपोर्ट में कहा गया था कि एक दिन पहले ही मद्रास(1) में हुई जनसभा में सी. राजगोपालाचारी ने नए राजनैतिक दल स्वतंत्रता पार्टी की स्थापना की घोषणा की थी। इस बैठक को संबोधित करने वाले अन्य विशिष्ट जनों में प्रो. एन.जी. रंगा, वी.पी. मेनन और एम.आर. मसानी शामिल थे। इस रिपोर्ट को पढ़ते हुए मैं (उस समय मैं 29 साल का था) इस बात का बामुश्किल ही एहसास पा सका कि एम.आर. मसानी के साथ शुरू होने जा रहा यह साथ अगले चालीस साल तक चलने वाला है।

इस प्रेस रिपोर्ट के छह माह बाद, मैं स्वतंत्रता पार्टी के बंबई(2) स्थित मुख्यालय में बतौर ऑफिस सेक्रेटरी काम कर रहा था और मुझे पार्टी के महासचिव मीनू मसानी को रिपोर्ट करनी होती थी। मसानी के संग मेरा साथ विभिन्न चरणों में रहा। पहले, स्वतंत्रता पार्टी के मुंबई स्थित मुख्यालय में बतौर ऑफिस सेक्रेटरी, बाद में एक्जीक्यूटिव सेक्रेटरी (कार्यकारी सचिव) रहा; इसके बाद मसानी की कंसल्टेंसी फर्म पर्सनल ऐंड प्रॉडक्टिविटी सर्विसेस में मैनेजमेंट कंसल्टंट रहा; और आखिरकार उनके द्वारा संस्थापित विभिन्न संस्थाओं में फेलो रहकर विभिन्न समस्याओं को मात देने वाले अहम खिलाड़ी की भूमिका निभाई, और इनकी संख्या काफी थी!

मसानी किस तरह के इनसान थे? उनकी ऐसी कौन-सी विशेषताएं थीं जिनके चलते उन्हें ऐसी पुस्तक का हिस्सा बनाया गया जोकि उन लोगों के बारे में है, जो उस बात के लिए पूरे साहस के साथ खड़े हुए जिसमें उनका यकीन था, बेशक इसके मायने ताकतवर संस्था से टक्कर लेने या बिना किसी समर्थन के अकेले आगे बढ़ना ही क्यों न हो? पहले प्रश्न का जवाब इस निबंध की विषय सामग्री है। दूसरे प्रश्न का जवाब, पाठक उस शख्स के बारे में दी गई जानकारी को पढ़कर खुद ही फैसला करेंगे, जिसे मेरे विचार में उन बहुत कम लोगों में शामिल किया जा सकता है, जिन्होंने आज़ादी के बाद भारत में उदारवाद की आत्मा को जिंदा रखा।

मसानी परिवार

चार बच्चों में से एक मीनू मसानी के पिता का नाम रुस्तम तथा माता का नाम मणिजेह मसानी था। यह परिवार उच्च मध्यमवर्गीय तो अवश्य ही था, परंतु किसी भी दृष्टि से अमीर नहीं था।

उनके पिता श्री रुस्तम पी. मसानी स्वयं मेहनत करके ऊपर उठे थे तथा उनका कैरियर अत्यंत उत्कृष्ट था जिसमें उन्होंने अनेक क्षेत्रों में महारथ हासिल की थी। वे पालिका के कर्मी रहे (मुंबई नगर पालिका के सचिव तथा बाद में पालिका आयुक्त), एक लेखक, जीवनीकार, जुझारू पत्रकार, बैंककर्मी, इतिहासकार तथा नृविज्ञानी थे।(3) मीनू के दो भाई और एक बहन थी तथा उन सभी ने काफी नाम कमाया था। केकी एक विख्यात मनोविज्ञानी थे तथा पेसी एक गणितज्ञ थे, जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र के पिट्टसबर्ग विश्वविद्यालय में पढ़ाया था। उनकी बहन मेहरा सरकारी सेवा में थीं तथा आकाशवाणी में उपमहानिदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुईं, हालांकि उन्होंने विरोधस्वरूप समयपूर्व ही सेवानिवृत्ति ले ली थी क्योंकि उनका मानना था कि उन्हें महानिदेशक का पद देने से इनकार किया गया, तो उनके साथ लिंग भेदभाव किया गया था। या फिर यह बात थी कि उन्हें इस कारण यह पद इसलिए नहीं दिया गया था क्योंकि उने भाई मीनू विपक्ष के एक स्पष्टवादी और निर्भीक वक्ता थे? ऐसे भेदभाव उस समय कोई असामान्य बात नहीं मानी जाती थी, जब भारत में 'एक परिवार' सत्ता में था।

परिवार में मीनू ही एकमात्र राजनेता थे और वे भी वाम दलों की ओर झुकाव वाले थे। हालांकि सर रुस्तम मसानी राजनीति में नहीं थे, फिर भी उनका दृष्टिकोण ऐसा था, जिसकी व्याख्या उदारवादी के रूप में की जा सकती है। उन्होंने आज़ादी के संघर्ष, में भाग नहीं लिया, हालांकि वे सर फिरोजशाह मेहता के काफी करीबी थे, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य तथा इसके अध्यक्ष थे। वे एक सख्त रूख वाले पिता थे तथा अपने गुस्सैल स्वभाव के लिए जाने जाते थे, पर फिर भी सर रुस्तम मसानी ने अपने विचारों को अपने बच्चों पर नहीं थोपा। वे अंग्रेजों के विरोधी नहीं थे, परंतु इसके साथ-साथ न तो किसी पर अनावश्यक रूप से अपना रौब जमाते थे और न ही किसी की जी-हजूरी करते थे। उनकी पुस्तक *'ब्रिटेन इन इंडिया'* में एक संतुलित दृष्टिकण दर्शाया गया था फिर भी उनके पुत्र मीनू सहित उस समय के स्वतंत्रता सेनानी ब्रिटिश शासन के लाभों के विषय में उनके विचारों को काफी सराहा नहीं करते थे। मीनू मसानी के भाई राजनीति में दिलचस्पी नहीं रखते थे, परंतु उनकी सरकारी अधिकारी बहन मेहरा, उनकी बहन होने के नाते उनकी राजनैतिक गतिविधियों में काफी रुचि लेती थीं। मैं यह बात निश्चित तौर पर

जानता हूं कि वे मेहरा से उस समय परामर्श मांगा करते थे, जब उन्हें यह लगता था कि उन्हें ऐसे सलाह की जरूरत है।

व्यवसाय का चुनाव

मीनू मसानी की प्रारंभिक शिक्षा कैथेड्रल हाईस्कूल और न्यू हाईस्कूल से, जो आज भद्र हाईस्कूल के नाम से जाना जाता है, हुई थी, ये मुंबई में थे और जहां से उन्होंने 1921 में दसवीं कक्षा पास की थी। उन्होंने स्कूल में क्रिकेट और हॉकी खेली तथा काउंट ओडोन सेविनी से संगीत की कक्षाएं लेते हुए वॉयलिन पर भी हाथ आजमाया, सेविनी मुंबई में ही बस गए थे। मीनू ने ट्रिनिटी कॉलेज ऑफ म्यूजिक द्वारा आयोजित परीक्षा भी उत्तीर्ण की। सेविनी के अन्य शिष्यों में मेहली मेहता (जुबिन मेहता के पिता) भी थे जो बाद में मुंबई के सर्वाधिक सफल संगीतकार बने। मीनू ने अपनी जीवनी में लिखा है, "मुझे यह याद करके वास्तव में अत्यंत प्रसन्नता होती है कि मैंने ऐसी महफिलों में वायलिन बजाई है, जो सेविनी के घर में आयोजित हुआ करती थीं जहां मेहली मेहता पहले वायलिन बजाते थे तथा मैं उनके बाद।"(5)

जब मीनू मसानी के पिता उन्हें डॉक्टर बनाना चाहते थे तथा वे इस बात से सहमत थे क्योंकि वे "इससे बेहतर व्यवसाय सोचने में सक्षम नहीं थे", परंतु उन्होंने अपने मित्र तथा सहपाठी यूसुफ मेहराली के सुझाव पर कानून का व्यवसाय चुना। मेहराली ने मसानी को आश्वस्त किया कि वे एक वकील बनने के अधिक उपयुक्त व्यक्ति हैं। उनका तर्क यह था कि कानून की डिग्री के साथ, मसानी "सार्वजनिक जीवन में देश की बेहतर रूप से सेवा कर सकते हैं।" मसानी ने अपनी जीवनी में लिखा है, "मुझे इस बात पर आश्चर्य है!" मेहराली के साथ अपनी दोस्ती के बारे में उन्होंने लिखा, "हालांकि मैं मेहराली को काफी अच्छा मानता था, मैं उसी जोश की भावना के साथ उनसे व्यवहार नहीं कर पाता था, जितना कि वे दर्शाया करते थे, और प्राय: वे मुझे 'ठंडा' व्यक्ति कहा करते थे। यह दो भिन्न व्यवहारों की बात थी। यूसुफ एक जीशोले, सौम्य, समर्पित व्यक्ति थे। उनके साथ, देशभक्ति एक धर्म बन गई थी तथा राष्ट्रभावना एक जाति।"(6) यह स्पष्ट स्वीकारोक्ति थी। मसानी काफी गुमसुम और निजीपन की भावना रखने वाले व्यक्ति थे। जब कभी वे किसी प्रश्न को निजी मानते थे, तो वह उसे अलग कर दिया करते थे। उदाहरण के लिए

यदि वे स्वयं को एक-दो दिन के लिए कार्यालय से अनुपस्थित रखते थे और जब उनसे पूछा जाता था कि क्या उन्हें कोई समस्या है, तो वे अत्यंत बेरूखी के साथ जवाब देते थे, "कोई बात नहीं है, हमें समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए" और तब वे सीधे अपने काम पर लग जाते थे।

स्कूल के बाद वे मुंबई में एल्फिन्स्टन कॉलेज तथा लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (एलएसई) तथा लिंकंस इन गए। भारत लौटने पर वे मुंबई अधिवक्ता परिषद में शामिल हो गए, परंतु जल्द ही उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए वकालत छोड़ दी, जिसके बारे में वे वे स्वयं भी माना करते थे कि "वकालत वैसे भी सफल नहीं थी।"

एलएसई एवं लास्की का प्रभाव

सार्वजनिक जीवन में मसानी का प्रवेश कानूनी व्यवसाय, लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स तथा मिडल टैंपल के माध्यम से हुआ था जो राजनीति में उनके कैरियर के लिए प्रारंभिक प्रशिक्षण-मैदान साबित हुए थे हालांकि वे एक वामपंथी और सोवियत विचारधारा के थे। मैंने अनेक भारतीय नेताओं की तुलना में जो अपने जीवन में इन बातों को सीखने को महत्व नहीं देते हैं, अपने स्कूल के दिनों में समितियों, चुनावों, आयोगों तथा दलगत राजनीति के बारे में संभवत: अधिक सीखा है, तथा हमारे बाद में आने वाले समाजवादी दिनों में भाषणों तथा लेखों में, मैं शायद ही अपने किशोरावस्था के उद्‌गारों को सुनने में कभी चूका होऊंगा।"(7)

एलएसई में उनके एक साथी छात्र वी.के. कृष्णा मेनन थे जो उस समय के एनी बेसेंट के अनुयायी थे तथा मसानी के मानदंडों के अनुसार एक "नरम पंथी" थे।(8) प्रारंभिक और एक-साथ बिताए गए एक छोटे समय के पश्चात, जब मसानी उनके समर्थक थे, उनका रिश्ता विरोध में बदल गया तथा मसानी के अपनी शिक्षा पूरी करके लंदन से आने से पूर्व ही ऐसा बदलाव आ गया था। आश्चर्यजनक रूप से वे मेनन से काफी दूर हो गए, उनके साम्यवादी विचारों की वजह से नहीं, बल्कि उनकी ओर से एक सच्चा साम्यवादी न बनने की वजह से! कृष्णा मेनन आगे चलकर ब्रिटिश लेबर पार्टी के सदस्य बने तथा फिर ब्रिटिश साम्यवादी पार्टी में चले गए, जिसके वे कार्डधारक सदस्य थे मेनन को नेहरू से मिलाने का 'श्रेय' मसानी को जाता है। नेहरू और मेनन बहुत गहरे मित्र बन गए। स्वतंत्रता के पश्चात मेनन को इंग्लैंड में भारतीय उच्चायुक्त बना दिया

गया, और बाद में वे भारत के रक्षा मंत्री बने। यह एक विडंबना ही है कि अनिच्छुक मन से नेहरू को मेनन के दोनों ही पदों का कार्यकाल पूरा होने से पूर्व ही उन्हें त्यागपत्र देने के लिए कहना पड़ा। उन्हें उच्चायुक्त के पद से तब हटना पड़ा जब वे प्रसिद्ध 'जीप घोटाले'(9) में शामिल पाए गए तथा रक्षा मंत्री का पद उन्हें तब छोड़ना पड़ा जब उन्हें साम्यवादी चीन के साथ 1962 के युद्ध में शर्मनाक हार के लिए उत्तरदायी माना गया।

कहा जाता है कि लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर हैरॉल्ड लास्की विशेष रूप से अपने भारतीय छात्रों पर पर्याप्त प्रभाव का प्रयोग किया करते थे। जबकि मसानी भी इसका अपवाद नहीं थे क्योंकि वे भी उन्हीं के कार्यकाल के दौरान वहां आए थे, परंतु जल्द ही उन्होंने लास्की की सोच में विरोधाभास को देख लिया और वे वहां से चले गए। परंतु लास्की ने जवाहरलाल नेहरू तथा कृष्णा मेनन जैसे अन्य विद्यार्थियों पर गहरा प्रभाव छोड़ा। संभवत: एक कारण यह भी था कि नेहरू के शासन के दौरान स्वतंत्र भारत में जो नीतियां अपनाई गईं, वे राज्यनियंत्रणवादी और उभयभावी प्रकृति की थीं जिनमें घोषित सोवियत-समर्थक नीतियां भी शामिल थीं।

सोवियत संघ के प्रशंसक

लास्की से प्रभावित होकर तथा एलएसई में अपने अध्ययन के दौरान, मसानी एक समूह में शामिल हो गए जो वर्ष 1927 में सोवियत संघ के दौरे पर गया। उन्होंने जो भी कुछ वहां देखा उससे वे अत्यंत प्रभावित हुए और वे उसका गुणगान करते हुए लौटे तथा वे इस बात के प्रति आश्वस्त थे कि स्वतंत्र भारत द्वारा अपनाए जाने के लिए वह एक आदर्श था।

मसानी ने सोवियत संघ का दो बार दौरा किया, पहली बार 1927 में जब वे एलएसई के विद्यार्थी थे तथा दूसरी बार, आठ वर्ष बाद 1935 में जब वे सोशलिस्ट कांग्रेस पार्टी के सचिव थे। मसानी लिखते हैं कि दूसरा दौरा जयप्रकाश नारायण के आग्रह पर था। यह रुचिकर है कि उन्हें सोवियत संघ का दौरा पुन: क्यों करना चाहिए, इसके लिए यह कारण दिया गया कि रूसी साम्यवादियों के साथ सीधे-सीधे बातचीत करना अधिक बेहतर रहेगा, बजाए इसके कि ब्रिटिश साम्यवादियों के माध्यम से ऐसा किया जाए। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (सीपीआई) के स्थान पर सोवियत

नेतृत्व के साथ बात करने की नेहरू की प्राथमिकता यही होती थी कि वे प्राय: भारत में सीपीआई के व्यवहार के विषय में शिकायत किया करते थे।

जब वे मास्को पहुंचे, तो मसानी ने पाया कि कॉमिन्टर्न के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करनी है, जो अंतरराष्ट्रीय साम्यवादी आंदोलन का प्रतिनिधित्व करने वाला निकाय था। और ये प्रतिनिधि और कोई नहीं, बल्कि हैरी पॉलिट तथा आर. पाल्म दत्त द्वारा नेतृत्व किए जा रहे ब्रिटिश साम्यवादी ही थे। मसानी सीएसपी की ओर से एक अधिदेश लेकर आए थे कि वे कॉमिन्टर्न से सहयोजित हो जाएं। जब उन्होंने उनसे कहा कि सीएसपी कॉमिन्टर्न के साथ सहयोजित होने के लिए तैयार हैं (हालंकि वे इस निकाय से संबंद्ध नहीं थे) बशर्ते मास्को सीपीआई से अपना समर्थन वापस ले ले। कॉमिन्टर्न की ओर से आर. पाल्म दत्त ने इस बात से इनकार करते हुए कहा, "देखिए कॉमरेड मसानी, हमें भारत में अपनी स्वयं की पार्टी चाहिए।"

अपनी इस यात्रा के बाद मसानी ने अपनी "सोवियत साइडलाइंट्स" नामक पत्रिका प्रकाशित की जिसमें उन्होंने सोवियत संघ और उसकी उपलब्धियों के लिए अपनी अदम्य प्रशंसा का त्याग किया। मसानी ने स्वीकार किया कि उनकी टिप्पणियां "नौसिखिया" थीं और साथ ही कहा कि, "मैं अपने आपको केवल इसी तर्क के आधार पर माफ कर सकता हूं कि मैं उन हजारों युवा विद्वतजनों में से एक था, जो वर्ष 1930 के दशक में सोवियत संघ के विरुद्ध न तो कुछ बुरा सुन सकते थे और न कुछ बुरा कह सकते थे।

इसी के साथ मसानी की समाजवादी अवस्था की शुरुआत हुई। वे कांग्रेस समाजवादी पार्टी (सीएसपी) के संस्थापक सदस्य बने जो एक स्वतंत्र राजनैतिक पार्टी नहीं थी, परंतु भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ही भीतर एक दबाव बनाने वाला समूह था, जो कांग्रेस को वाम दलों की ओर ले जा रहा था। अपने प्रारंभिक दिनों में, कांग्रेस उदारवादियों की पार्टी थी तथा उसकी उन्मुखता भी उदारवादी थी। गांधी जी के कांग्रेस में प्रवेश तथा गोखले के निधन से पार्टी की उदारवादी प्रधानता समाप्त हो गई। उदारवादियों ने 1918 में कांग्रेस को छोड़ दिया तथा अपनी स्वयं की पार्टी बना ली, जो भारतीय उदारवादी पार्टी (इंडियन लिबरल पार्टी) थी।

जब गांधीजी निर्विवाद रूप से कांग्रेस के नेता के रूप में उभरकर आए, तो सीएसपी में समाजवादी नेता उनके प्रमुख आलोचक थे। जवाहरलाल नेहरू सीएसपी के प्रति नर्म रूख रखते थे, हालांकि वे स्वयं को उनके साथ खुले में दिखाने के प्रति इच्छुक नहीं थे। स्वाभाविक रूप से, सीएसपी का संस्थापक सदस्य होने तथा संयुक्त सचिव होने के कारण मसानी ने जवाहरलाल नेहरू का समर्थन हासिल किया। दूसरी ओर, सरदार पटेल और राजाजी ने कभी भी मसानी की तरफ विनम्रता के भाव से नहीं देखा। उनके लिए वे परेशानियां पैदा करने वाले एक समाजवादी थे। यदि मसानी ने समाजवाद को लोकप्रिय न बनाया होता, और वे सामान्य रूप से कट्टर आलोचक न बने होते, तो शायद मसानी भी, अपने समकालीन वी.के. कृष्णा मेनन की ही भांति सार्वजनिक पद हासिल कर सकते थे, जिसमें केंद्रीय मंत्री का पद भी शामिल हो सकता था। इसके स्थान पर, वे अधिक-से-अधिक जहां तक पहुंच सके, उनमें संविधान सभा के सदस्य, ब्राजील के राजदूत तथा संयुक्त राष्ट्र भेदभाव निवारण और अल्पसंख्यक संरक्षण उप-आयोग के अध्यक्ष का पद भी शामिल है।

स्वतंत्रता सेनानी

भारत लौटने पर मसानी ने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेने के साथ अपनी वकालत का मिश्रण करने का प्रयास किया। इन दोनों में तालमेल नहीं बैठ सका और मसानी ने स्वयं स्वीकार किया कि वे एक अच्छे वकील के गुणों से लैस नहीं थे। वकालत उनकी पृष्ठभूमि की देन थी तथा स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी सहभागिता आगे उभरकर आई। उनके इंग्लैंड से लौटने के चार साल बाद, मई 1932 में मसानी स्वतंत्रता सेनानी के तौर पर पहली बार जेल गए। उन्हें नागरिक अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के लिए बिना सुनवाई के दो माह तक जेल में रखा गया, जो उस समय अपना प्रभाव बढ़ाना आरंभ कर रहा था। एक वर्ष से भी कम समय बाद, जनवरी, 1933 में, उन्हें एक बार फिर बैठकों पर लगे प्रतिबंध को तोड़ने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया था उन्होंने वह पूरा वर्ष नासिक की केंद्रीय कारागार में बिताया।

नासिक जेल में ही वे अन्य कैदियों के संपर्क में आए जिनमें अन्य लोगों के साथ-साथ जय प्रकाश नारायण (जेपी), अच्युत पटवर्धन तथा यूसुफ मेहराली और अशोक मेहता शामिल थे तथा उन्होंने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (सीएसपी) का गठन किया और उसके संयुक्त सचिव बने। इन चारों के

बीच एक अटूट रिश्ता उस वर्ष जेल में कायम हुआ, हालांकि आने वाले वर्षों में उन्होंने अलग-अलग राजनैतिक रास्ते अपना लिए।

संयुक्त राष्ट्र में एक छात्र के रूप में जेपी संयुक्त राष्ट्र की कम्युनिस्ट पार्टी से प्रभावित हुए थे, जैसा मसानी ने लिखा है, वे सभी व्यावहारिक प्रयोजनों से, एक साम्यवादी थे।" जयप्रकाश ने भी स्वयं को एक "राष्ट्रीय साम्यवादी" माना है, जो अनेक संदर्भों में विरोधाभासी है। और यह विरोधाभास जल्द ही वास्तविकता में बदल गया जब जेपी ने साम्यवाद को अस्वीकार कर दिया। मसानी लिखते हैं, "वे उस समय घबरा गए जब भारतीय साम्यवादी पार्टी (सीपीआई) ने मास्को के मार्ग का अनुसरण किया कि सभी राष्ट्रवादी तथा लोकतांत्रिक समाजवादी "सामाजिक फासीवादी हैं जिनके बीच कोई सहयोग संभव नहीं है तथा जिनका लोगों के बीच प्रभाव कम होता जा रहा है।"(12) अत: जेपी ने, कि "श्रमिक-वर्ग की तानाशाही के सच्चे पक्षधर थे" और जिनके लिए "मार्क्सवाद उनके विश्वास की आधारशिला थी" तथा मसानी, "ब्रिटिश लेबर पार्टी प्रकार के एक कट्टर लोकतंत्रवादी" और इससे भी अधिक "अक्तूबर क्रांति के अत्यंत कट्टर प्रशंसक थे, उनके साथ मिलकर पार्टी का गठन कर दिया क्योंकि ये दोनों ही, "भारत के राजनैतिक मानचित्र पर समाजवाद लाने के इच्छुक थे और वे इसके लिए सामंतवाद विरोधी संघर्ष तैयार करने लगे।"

समाजवादी मसानी

खास बात यह है कि उसी समय के आसपास, स्वराज पार्टी का पुनरुद्धार करने के प्रयास भी किए जा रहे थे (जो राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर दबाव बनाने वाला समूह था परंतु वह उदारवादियों की ही भांति नीतियों की वकालत किया करता था हालांकि वे लोग स्वयं को उदारवादी के रूप में वणत करने के प्रति अनिच्छुक थे। संभवत: इसीलिए क्योंकि कांग्रेस के भीतर मौजूद उदारवादियों ने कांग्रेस छोड़ दी थी तथा लिबरल पार्टी ऑफ इंडिया का गठन कर लिया था, क्योंकि उन्होंने बड़ी संख्या में लोगों को शामिल किए जाने वाले संघर्ष की योजना का समर्थन नहीं किया, और स्वराजी स्वयं को उदारवादी पार्टी के साथ सहयोजित होता हुआ नहीं देखना चाहते थे)। अपनी जीवनी में मसानी ने अपने उस भाषण का उल्लेख किया है, जो उन्होंने वर्ष 1934 में स्वराज पार्टी के बिहार में हुए एक अधिवेशन में दिया था जिसके परिणामस्वरूप स्वराजी लोग

विधानमंडलों को छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए सड़कों पर मरने के लिए प्रोत्साहित हुए थे। इसके बारे में तीन दशकों के पश्चात लिखते हुए मसानी ने नाराज होकर टिप्पणी की कि "मेरे भाषण ने शायद आज के उदारवादी नेताओं के लिए कुछ अप्रासंगिक संदेश दिया होगा, जिनमें से अनेकों का सार्वजनिक सेवा में एक लंबा तथा बेहतरीन रिकॉर्ड है।"(13) अपनी 30 साल की उम्र के दौर मसानी ऐसे थे, एक कट्टर समाजवादी जिन्होंने नवनिर्मित कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के लिए समर्थन प्रदान करने के संबंध में जवाहरलाल नेहरू तक को पत्र लिख दिया था।(14)

वस्तुत: उनके पिता ने, जो स्वयं एक समाजवादी थे (हालांकि उन्होंने राजनीति अथवा स्वाधीनता संग्राम में भाग नहीं लिया)। अपने पुत्र से कहा था वे अपने घर से ही संचालित किए जा रहे वर्ग-संघर्ष के अति प्रचार को पसंद नहीं करते हैं। मसानी ने घर त्याग दिया। मसानी कुछ राहत के साथ लिखते हैं कि "उनका अलग होना मैत्रीपूर्ण" था।(15) मसानी के लिए जीवन उस समय तक काफी कठिन था, उस समय तक अपने संघर्ष पूर्ण क्रियाकलापों के पश्चात अपने आरामदेह घर में लौट आते थे। अनेक सालों के बाद, स्वतंत्रता पार्टी के महासचिव के रूप में, वे प्राय: एक कार्यकर्ता के रूप में अपने अनुभवों का वर्णन किया करते थे तथा उन कठिनाइयों का जिक्र करते थे जो उन्होंने एक समाजवादी के रूप में अपने साथियों के साथ हंसते-हंसते झेलीं थीं। वे तीसरी श्रेणी के डिब्बों में बिना आरक्षण के लंबी दूरी की यात्राओं को याद किया करते थे, तथा प्राय: वे स्टेशनों पर नाश्ता या दोपहर का भोजन भी नहीं किया करते थे, जिसकी वजह यह थी कि उनके पास पैसे की तंगी या खर्च के लिए कभी-कभी तो बिलकुल पैसे ही नहीं होते थे। वे उत्सुकता के साथ अपने गंतव्य पर पहुंचने का इंतजार करते थे ताकि वे अपने मेजबानों के खर्च पर भरपेट भोजन कर सकें।

एक बार, उनकी कार में यात्रा में करते हुए हम सेसिल होटल के पास से गुजरे जो प्रसिद्ध गोवलिया टैंक मैदान के, जिसे आज "अगस्त क्रांति मैदान" कहा जाता के, समीप ही था। सेसिल होटल चौपाटी और ऑपेरा हाउस से आने वाली सड़कों के चौराहे के साथ ही स्थित है। अपने घर को छोड़ने की बातों को भावनात्मकता के साथ उन्होंने याद किया कि कैसे उन्होंने सेसिल होटल

से एक कुर्सी, एक प्लेट तथा एक कड़छी उधार ली थी। उन्होंने वह कुर्सी होटल के सामने फुटपाथ पर रखी और वहां से गुजरने वालों का ध्यान आकर्षित करने के लिए कड़छी से प्लेट को बजाया तथा ब्रिटिश शासन की भर्त्सना करते हुए उसी समय तैयार किया गया एक भाषण दिया। जब तक वहां पुलिस पहुंचती, वे तेजी से उस होटल में चले जाते, एक कप चाय पीते थे तथा चुपचाप वहां से खिसक जाया करते थे। उन्होंने मुझ से कहा, "इस स्थिति की तुलना आज के कार्यकर्ताओं से कीजिए, जिन्हें आरमदेह सफर चाहिए, जिन्हें एक अच्छे भत्ते की आशा होती है तथा अपना भाषण देने के लिए माइक की जरूरत होती है। वे यह बात कहकर स्वयं को सांत्वना देने लगे," उसी समय हम ब्रिटिश शासन से आजादी चाहते थे। आज हम कांग्रेस के कुशासन से आजादी मांग रहे हैं। कल्पना करेंगे तो पाएंगे कि ये दोनों बातें एक-समान नहीं हैं।" असलियत यह थी कि जब कभी भी मसानी ने अपने समाजवादी दिनों को याद दिया, तो हमेशा ही उन्हें अपने गृह-विरह की पीड़ा हुई तथा साथ ही उस बात का पछतावा भी हुआ। वे मुझे बताया करते थे कि एक-दूसरे की तुलना में, वे अन्य राजनैतिक पार्टियों के अधिकांश अन्य नेताओं से अधिक समर्पित और सच्चे कार्यकर्ता थे।

सोवियत साम्यवाद के प्रति मोह-भंग

इतनी मजबूत समाजवादी आस्थाओं तथा निष्ठा के बावजूद, उन्हें समाजवाद से किनारा करने के लिए किस चीज ने मजबूर किया? परंतु इससे पहले कि हम उस बात पर आएं, यह बात जानना जरूरी है कि वे परिस्थितियां क्या थीं, जिनकी वजह से उन्होंने सीएसपी के सचिव पद से त्याग-पत्र दे दिया तथा बाद में पार्टी की सदस्यता से भी इस्तीफा दे दिया। इसके तात्कालिक कारण ये थे कि सोवियत साम्यवाद के प्रति उनका निरंतर मोह-भंग होता जा रहा था तथा सीपीआई के साथ मिलकर एक संयुक्त मोर्चा बनाने के लिए जेपी सहित अपने सहयोगियों को रोकने के उनके प्रयास विफल हो गए थे। परंतु एक अन्य कारण भी था। यह था मार्क्सवाद की धारणाओं पर उनके द्वारा व्यक्त किया गया असंतोष।

तीसवें दशक के प्रारंभिक वर्ष सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी में स्टालिन द्वारा अपने विरोधियों का सफाया करने की अवधि थी था इसी दौरान उन लाखों किसानों की भी हार हुई जो

खेतों के जबरन सामूहिकीकरण की उनकी नीति का विरोध कर रहे थे। स्टालिन की बर्बरता से भयभीत होकर सोवियत साम्यवादियों से हुए उनके मोहभंग के परिणामस्वरूप ही उन्होंने भारतीय साम्यवादियों की साख पर प्रश्न-चिन्ह लगाए थे।

उन्होंने ईएमएस नंबूदिरीपाद तथा पी.सी. जोशी द्वारा नेतृत्व प्रदान किए गए साम्यवादियों के इस प्रयास का जोरदार विरोध किया जो सीएसपी में घुसपैठ करके उस पर उस समय कब्जा जमाना चाहते थे, जब इसके अधिकांश नेता जेलों में थे। सीएसपी के ऊपर साम्यवादियों के फैलते शिकंजे के बारे में अपने अधिकांश सहयोगियों को आश्वस्त न कर पाने में असफल रहने पर उन्होंने अपने पद से तो त्यागपत्र दे दिया, परंतु वे इसके सदस्य बने रहे। उन्होंने 1939 में पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया तथा ब्रिटिश युद्ध प्रयासों को समर्थन न देने के इसके संकल्प को भी त्याग दिया।

लेकिन, सीएसपी से उनके पलायन का अर्थ यह नहीं था कि उन्होंने समाजवाद को ही त्याग दिया था। यह बात बाद में सिद्ध होनी थी। परंतु उस समय उन्होंने सक्रिय राजनीति से 'सेवानिवृत्ति' लेने का निर्णय लिया। उन्होंने इसे अपनी पहली सेवानिवृत्ति कहा। ऐसी ही दो अभी आनी बाकी हैं, जैसे हमने यह पहली देखी है। परंतु वे कांग्रेस के सामान्य सदस्य बने रहे, वे सक्रिय राजनीति से अलग हो गए तथा अन्य बातों की ओर ध्यान लगा लिया। ये अन्य बातें पुस्तक लेखन थी, जिसने उन्हें उनके स्वयं के अधिकार के बल पर एक लोकप्रिय हस्ती बना दिया। यह पुस्तक थी 'अवर इंडिया', जो बहुत अधिक बिकी तथा उनके लिए अच्छा रोजगार लेकर आई। इसके बारे में बाद में चर्चा करेंगे। यह पुस्तक उन्हें नेहरू के करीब लाई क्योंकि 'अवर इंडिया' में उन बातों को प्रतिध्वनित किया गया था, जो नेहरू ने "नेहरूवादी समाजवाद' में कही थीं।

गांधी ने मार्क्स का स्थान लिया

मसानी के पास अनेक समसामयिक आदर्श-वाक्य थे। मैं भी उनमें से अनेक को सुनता था। उनमें से एक था 'आप' 'कुछ' को 'कुछ नहीं' के साथ नहीं बदल सकते हैं। आपको 'कुछ' को 'कुछ बेहतर' के साथ ही बदलना होगा।" उनके मामले में, मार्क्स का स्थान गांधी द्वारा लिया जा रहा था।

परंतु यह बदलाव बहुत धीमा था तथा यह अनेक वर्षों तक चलने वाली प्रक्रिया थी। मसानी गांधी से मिलाने के लिए अपने पिता का धन्यवाद करते हैं।

जेल से बाहर आने के बाद एक युवा समाजवादी आंदोलनकारी के रूप में वे गांधी की नीतियों का विरोध करने के लिए कृतसंकल्प थे। उन्होंने अपने संस्मरण में लिखा है, "मैं संपरिवर्तित न होने के प्रति दृढ़संकल्प था। उस 'वृद्ध व्यक्ति' के प्रति ईमानदारी दिखाते यह अवश्य ही मानना होगा कि उन्होंने कभी भी हमें हमारे समाजवादी सिद्धांतों को छोड़ने के लिए हमें समझने की दिशा में कोई प्रयास नहीं किया। इसके विपरीत, एक युवा जिहादी की भांति मैंने यह सोचा था कि मैं उस वृद्ध व्यक्ति के भीतर चेतना जागृत करूंगा और हमारे सिद्धांतों की श्रेष्ठता उसे दिखाऊंगा तथा उसकी सीमाओं के बारे में उसे बताऊंगा।"(16) गांधी स्वाभाविक रूप से युवा मसानी के साथ अत्यंत धैर्य और सहिष्णुता का व्यवहार करते थे। यह बंधन और भी मजबूत तब बना, जब अस्पृश्यता के उन्मूलन के प्रति समर्पित अपनी उड़ीसा की पैदल यात्रा में गांधीजी ने उन्हें अपने साथ चलने के लिए आमंत्रित किया। यह यात्रा मई 1934 में आयोजित हुई थी। दस दिन की इस यात्रा की समाप्ति के पश्चात मसानी ने गांधीजी से विदा ली तथा उनके पास कुछ प्रश्न और कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संकल्प का मसौदा तथा इसका कार्यक्रम विचार के लिए छोड़ दिए।

गांधीजी के जवाब के बारे में, मसानी ने लिखा है, "मेरे लिए गांधीजीकी टिप्पणियां आज एकदम उचित तथा व्यावहारिक प्रतीत होती हैं। वस्तुत: बाद में मेरे दृष्टिकोण भी लगभग उसी तर्ज पर थे, जो भी उन्होंने मुझसे कहा था, परंतु उस समय तक उनके जवाबों ने मुझे चौंका दिया था।"

नागरिकों पर उस समय रजवाड़ों की व्यवस्था से शासन किया जाता था, "मैं रजवाड़ों के शासन के उन्मूलन के खिलाफ नहीं हूं, परंतु मैं लोकतंत्र की सच्ची भावना के साथ सहयोजित होते हुए इसके रूपांतरण और परिवर्धन पर विश्वास करता हूं जो इसका राष्ट्रीयकरण कर सके, "उत्पादन, वितरण तथा विनियमन के सभी उपकरणों का उत्तरोत्तर राष्ट्रीकरण इतना व्यापक है कि उसे अनुमेय बनाया जाना कठिन कार्य है। रविंद्रनाथ टैगोर अत्यंत उत्कृष्ट उत्पादन के एक उपकरण हैं। मैं नहीं जानता कि राष्ट्रीयकृत होकर वे किस प्रकार की रचनाएं लिखेंगे, और जहां तक राय के एकाधिकार का प्रश्न है, "राय को अपने द्वारा निहित शक्तियों से ही संतुष्ट हो जाना चाहिए?

क्या इसे अपनी सभी शक्तियों का प्रयोग एक-साथ करना चाहिए, चाहे ऐसा किया जाना आवश्यक हो या नहीं?(18)

ऐसे अनेक अन्य अवसर थे, जब मसानी गांधीजी से तर्क-वितर्क करते थे और उनसे असहमत भी हो जाते थे। परंतु इन सभी बातों के बावजूद, यदि मसानी का कोई उत्प्रेरक था, तो वे गांधीजी ही थे। इस बात में कोई संदेह ही नहीं है कि गांधीजी के प्रभाव की वजह से मसानी अपनी सामाजिक मान्यताओं से छुटकारा पा सके और उदारवादी मूल्यों की दिशा में आगे बढ़े। मसानी ने अपनी जीवनी में लिखा है, "निसंदेह मैं जिस महानतम व्यक्ति को जानता हूं वह 'महात्मा गांधी' हैं।"(18)

गांधी की विचारधारा से मैंने दो मूलभूत सिद्धांत स्वीकार किए हैं, पहला यह कि समाप्ति साधनों का औचित्य नहीं सिद्ध करती है तथा यह कि बल एवं धोखे के प्रयोग के माध्यम से कोई अच्छी सामाजिक व्यवस्था विकसित नहीं हो सकती है, तथा बीसवीं शताब्दी के द्वितीय भाग में सर्वहारी राय ही मानव की स्वतंत्रता की सबसे बड़ी चुनौती बनने के संकट में है। विचारों का कोई विद्यालय अथवा सरकार का कोई तंत्र इन दो धारणाओं से विरुद्ध उतनी हिंसक प्रकृति के साथ बुरा नहीं करते हैं जितना कि पर्वसत्तावादी साम्यवाद करता है।"(19)

मसानी पर गांधी के इस अत्यंत उत्कृष्ट प्रभाव के बावजूद साम्यवाद की उनके द्वारा की जाने वाली भर्त्सना तथा सीएसपी से उनके त्यागपत्र का यह अर्थ नहीं था कि उन्होंने समाजवाद से किनारा कर लिया था। यह बात उनकी पुस्तक "अवर इंडिया" से स्पष्ट है।(20) जैसा मैंने पहले उल्लेख किया, उनका एक आदर्श वाक्य था, "आप 'कुछ' को 'कुछ नहीं' के साथ प्रतिस्थापित नहीं कर सकते हैं।" आपका हमेशा 'कुछ ' को 'कुछ बेहतर' के साथ ही बदलना होगा।" यह 'कुछ बेहतर' कुछ वर्ष पश्चात आएगा। इसी दौरान, *अवर इंडिया* की बहुत ही अधिक बिक्री हुई और पचास के दशक के प्रारंभ में इसकी दस लाख प्रतियां बिक गईं। भारत की अनेक भाषाओं में इसका व्यापक अनुवाद हुआ। *अवर इंडिया* के बाद शीघ्र ही उनकी दो अन्य पुस्तकें भी आईं।, *"पिक्चर ऑफ ए प्लान'* तथा *'अवर फूड'*। इन पुस्तकों से हुई आय से मसानी कुछ अधिक आराम से रहने लगे।

यह चालीसवें दशक के आरंभिक वर्ष थे। तथा जैसा उन्होंने अपनी जीवनी में लिखा है, "जबकि द्वितीय विश्व युद्ध तथा भारत छोड़ो आंदोलन अपने-अपने संबंधित रास्तों पर चल रहे थे, मैं अपनी स्वयं की स्थिति तथा समाजवाद की समस्याओं और एक स्वतंत्र समाज की परेशानियों के बीच तुलना के विषय में गहन पुनर्विचार में जुटा था। मार्क्सवाद तथा समाजवाद के प्रति मेरी समस्त संवेदनाएं समाप्त हो चुकी थीं। प्रश्न यह उठ रहा था कि दर्शन तथा जीवन का तरीका किस प्रकार अपना-अपना स्थान लेंगे।

"जिन दो प्रमुख कारकों ने मेरे विचारों में इस परिवर्तन को लाने के लिए योगदान दिया, वे अपने शब्दों के किसी भी मायने में बेहतरी उपलब्ध कराने में सोवियत क्रांति की असफलता तथा महात्मा गांधी का प्रभाव था।"(21)

समाजवाद पर पुनर्विचार

इसका परिणाम यह हुआ कि वर्ष 1944 में उन्होंने *सोशलिज़्म रीकन्सीडर्ड* लिखी जिसमें मार्क्सवाद की कुछ अवधारणाओं पर प्रश्न किए हैं:

"मार्क्सवाद की चार अवधारणाएं हैं, हालांकि इससे अधिक भी हो सकती है, जिन्हें मैं समझधता हूं कि मुझे पुन: विचार करने की आवश्यकता है। इनमें से पहली है निजी संपत्ति का उन्मूलन तथा इसका राष्ट्रीयकरण स्वत: ही आर्थिक लोकतंत्र तथा वर्गहीन समाज को जन्म देगा। रूस में यह दिखने लगा है कि इसे ऐसा कोई प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है।"

दूसरी मार्क्सवादी अवधारणा जिसकी समीक्षा किए जाने की आवश्यकता है, वह यह है कि मजदूर वर्ग की तानाशाही समाजवाद के लिए एक संभव तथा वस्तुत: आवश्यक परिवर्तन है न इसका सिद्धांत यह था कि अपना उद्देशय सफल करने के पश्चात तानाशाही समाप्त हो जाएगी, तथा वास्तव में ही जैसा कि एंजेल्स ने कहा है, "राज्य तब मुरझा जाएगा।" रूस में सोवियत सरकार ने दर्शाया है कि हर प्रकार की वैयक्तिक स्वतंत्रता पर से अपना पूर्ण स्वामित्व बनाए रखने में ढिलाई की प्रवृत्ति की गुंजाइश ही नहीं है, जिससे 'मुरझाने' के लिए कोई विकल्प शेष रहता ही नहीं है।

"तीसरी मार्क्सवादी अवधारणा जो लगाता है कि पिछले दो दशकों में समीक्षा किए जाने के लिए असमर्थ रही, वह यह है कि समाजवाद को श्रमजीवी वर्ग के सामूहिक स्वार्थ को ललचाकर प्राप्त किया जा सकता है तथा साथ ही संपत्ति धारण करने वाले वर्ग के प्रति इसकी सामूहिक नफरत से जागृत किया जा सकता है। दुर्भाग्यवश, श्रमिकों के सामूहिक स्वार्थ के लिए की गई अपील के परिणामस्वरूप वे लोग शोषण और अन्याय के लिए प्राय: मोहरा बन गए। हमने पहले ही देखा है कि किस प्रकार ब्रिटेन के श्रमजीवी वर्ग को साम्राज्य के लाभों में से बहुत ही कम भाग दिया जाता था, तथा इसी के फलस्वरूप एक ऐसी लेबर पार्टी का जन्म हुआ, जो साम्राज्यवादी व्यवस्था के विश्व में एक अत्यंत विरोध का कारण है।

"फिर भी एक अन्य धारणा यह है कि समाजवाद पूंजीवाद का एकमात्र विकल्प है। मैं यह अवश्य स्वीकार करूंगा कि मैं भी स्वयं ही दृष्टिकोण 1937 अथवा 1938 तक रखता था । परंतु क्या यह सही था? कि पुराने प्रकार के पूंजीवाद को स्वाभाविक रूप से समाप्त कर दिया गया है। परंतु क्या समाजवाद एक अनिवार्य बात है अथवा कोई तीसरी ही शक्ति है, उभरकर सामने आने वाली है।

"आज के संदर्भ में, केवल वही समाजवादी है, जो स्वतंत्रता और योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था पर जोर देता है। ऐसे सभी लोगों के लिए यह आवश्यक बन जाता है कि वे ऐसी अवधारणाओं पर पुनर्विचार करें जिन पर रूढ़िवादी समाजवाद अभी तक आधारित रहा है तथा ऐसे साधनों को पुन: परिभाषित करें जिनके द्वारा कोई भी व्यक्ति अंत की प्राप्ति की आशा कर सकता है।"(22)

यहां वर्णित की गई मसानी की पसंद "पूंजीवाद और समाजवाद के बीच नहीं थी" परंतु जीवन के लोकतांत्रिक अथवा स्वतंत्र तरीके और सर्वसत्तात्मक तरीके के बीच में थी, चाहे वह फासीवाद अथवा साम्यवाद प्रकार का हो।"(23) वस्तुत: मसानी बार-बार यह कहते रहे कि वे एक स्वतंत्र एवं समान समाज के समाजवाद के उद्देश्यों के खिलाफ नहीं है, परंतु इसकी पद्धतियों के खिलाफ हैं। उन्होंने अपने साथी समाजवादियों से अपनी उपदेश देने की प्रवृत्ति को छोड़ देने की अपील की। यहां तक कि 26 अगस्त, 1965 में लोकसभा में दिए गए अपने भाषण में, मसानी ने कहा, "हम एक स्वतंत्र तथा समान समाज के समाजवादी लक्ष्य को स्वीकार करते हैं, परंतु हम यह देखकर

यह बात तो अवश्य ही जान सकते हैं कि राज्यनियंत्रणवाद तथा अन्य नियंत्रणों की पद्धति वह पद्धति नहीं है, जो एक स्वतंत्र एवं समाज समाज को जन्म देती है।

अत: उन्होंने एक नए विचार पर कार्य किया तथा उसे "मिश्रित अर्थव्यवस्था' का नाम किया। वर्ष 1947 में, उन्हें मुंबई विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एवं सोशियोलॉजी द्वारा उसकी रजत जयंती व्याख्यान श्रृंखला में एक भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया। इसने उन्हें विश्वविद्यालय के छात्रों तथा लोगों के मध्य उनके समाजवाद के बारे में किए गए पुनर्विचार के परिणामों की व्याख्या करने का असवर मिल गया। उन्होंने इसे "मिश्रित अर्थव्यवस्था के लिए एक तर्क" का नाम दिया। मैं इस बात को पूरी निश्चितता के साथ कहने में समर्थ नहीं हूं कि मसानी भारत के वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने आर्थिक संगठन के इस रूप के विषय में सोचा था। परंतु यह कहना तो अवश्य ही तथ्यात्मक होगा कि वे इस अवधारणा को प्रोत्साहित करने वाले पहले लोगों में से एक थे। हालांकि, इसने भारत की पंचवर्षीय योजनाओं से स्थान पा लिया। लेकिन जैसा यह हमेशा ही अवधारणाओं को कार्रवाई में रूपांतरित करने के मामले में होता है, यह विकृत अवधारणा बन गई तथा इसे बराबर की मान्यता मिली। जैसा कि उन्होंने एक बार मुझे बताया था, नेहरू ने उनकी (मसानी के) "मिश्रित अर्थव्यवस्था' की अवधारणा को "उलझी हुई अवधारणा" बना दिया।"

मसानी की "मिश्रित अर्थव्यवस्था" एक ऐसी संतुलित व्यवस्था थी, जिसमें राज्य और नागरिकों द्वारा अर्थव्यवस्था में अपनी-अपनी भूमिकाओं का निर्वाह करना था तथा साथ-ही-साथ यह सुनिश्चित भी किया जाना था कि व्यक्ति-विशेष और मुक्त समाज की स्वतंत्रता की भी रक्षा हो सके। सोवियत के प्रयोग ने उन्हें इस बात के लिए आश्वस्त कर दिया था कि आर्थिक ताकत के साथ मिलकर राजनैतिक ताकत लोगों के दमन के रूप में ही कार्य करेगी। उन्होंने यह प्रश्न पूछा कि "क्या राज्य का स्वामित्व तथा उद्योगों का प्रबंधन हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति का जवाब है?"

"राज्य के स्वामित्व तथा उद्योगों के प्रबंधन की नीति का अस्वीकारण किसी भी व्यक्ति के लिए यथास्थिति बनाए रखने के प्रति संतुष्टि की बात नहीं हो सकती है। मैं इसी बात को आगे ले

जाता हूं, केवल एक दयनीय प्रतिस्थानी के रूप में नहीं, और न ही वास्तविकता के मात्र आधे मार्ग तक, परंतु एक बेहतर, अधिक वैज्ञानिक और समान छोरों के लिए कार्यकरण की आधुनिक पद्धति के साथ बजाए इसके कि हम उन्नीसवीं शताब्दी के तथाकथित 'वैज्ञानिक समाजवाद' के साथ ही उलझे रहें।

"ऐसी अनेक बातें हैं जिन पर मिश्रित अर्थव्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण बनाने के लिए बल दिए जाने की जरूरत है। पहली बात तो यह है कि हमारा दृष्टिकोण किसी भी प्रकार के उपदेश देने से मुक्त होना चाहिए। दूसरी बल दिए जाने की बात यह है कि भारत एक ऐसा विशाल देश है वहां एक ही समय पर सभी प्रकार के उत्पादनों का प्रयास किया जा सकता है और चूंकि हम अभी तक हमारी औद्योगिक क्रांति की शुरुआत में ही हैं, विद्यमान उद्यमों का राष्ट्रीयकरण मात्र कर देने से, हर हाल में केवल हमारे सामने व्याप्त अनेकों समस्याओं को हल मात्र आ ही जा सकेगा, उनका समाधान संभव न हो सकेगा। हमारे दृष्टिकोण में तीसरा कारक उस विशाल योगदान का अधिकतम उपयोग करना है, जो महात्मा गांधी द्वारा हमारे देश की आर्थिक विचारधारा के लिए दिया गया है, अर्थात् उद्योगों के विकेंद्रीकरण तथा इसके नियंत्रण पर बल प्रदान करना। चौथी बात राज्य पर से ध्यान हटाकर उसे उद्योगों पर श्रमिकों के बढ़ते हुए नियंत्रण की ओर लगाना है तथा उद्योग के प्रशासन और इसके लाभों, दोनों ही पर श्रमिकों की भागीदारी को परिपुष्ट बनाना है। पांचवां और अंतिम कार्य, मिश्रित अर्थव्यवस्था स्वामित्व एवं प्रबंधन पर कम निर्भर करेगी तथा नियंत्रण पर अधिक आश्रित रहेगी ताकि यह देखा जा सके कि सामुदायिक व्यवस्था के हित ही प्रधान हैं।(24)

यह तो आधा ही मार्ग था तथा स्पष्ट रूप से उनके समाजवादी साथियों को पुन:आश्वासन देने का प्रयास था। परंतु उन्होंने मसानी को उनके अपसिद्धांत के लिए क्षमा नहीं किया। हालांकि उनमें से अनेक उनके मित्र बने रहे, मैं व्यक्तिगत रूप से यह सत्यापित कर सकता हूं कि जयप्रकाश नारायण, जिन्होंने समाजवाद से नाता तोड़ लिया था तथा सर्वोदय और अच्युत पटवर्धन, जो जे. कृष्णमूर्ति के दर्शन की ओर झुक गए थे, को छोड़कर कुछ और सिद्धांतवादियों ने मसानी के साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया था।

वास्तव में, मसानी ने कुछ अप्रसन्नता के साथ उस बात को लिया जब समाजवादी पार्टी के पत्र 'जनता' में मिश्रित अर्थव्यवस्था पर उनके भाष्य की समीक्षा करते हुए एक लेख को प्रकाशित किया, जिसका शीर्षक था "समाजवाद का गिरा हुआ मसीहा।" दूसरी ओर, "राजाजी पहले ही एक क्रोधित आलोचक की भूमिका से निकलकर (मसानी के दृष्टिकोण पर) एक प्रशंसा करने वाले पाठक के रूप में स्थापित हो गए थे, और उन्होंने उन्हें लिखा, "आपकी सुंदर-सी छोटी पुस्तक सच्चाइयों से भरी है, जैसे यह सुंदर तरीके से लिखी गई है।"(25)

इस अवस्था के दौरान, समाजवाद से उदारवाद की ओर अंतरित होते हुए तथा तत्कालीन सीएसपी में अपने साथी कामरेडों के अनुमोदन के स्थान पर मात्र उनकी आपसी समझ के लिए पूरी तरह तरसते मसानी, देश के भीतर तथा शेष विश्व में साम्यवादियों का विरोध करने में कोई समझौता नहीं करना चाहते थे। उन्होंने साम्यवादी आंदोलन का निर्वचन करने, उसे बेनकाब करने तथा उससे लड़ने को अपना लक्ष्य बना लिया। एक बार मैंने उदारवादी नेता से हाल में ही स्वर्गवासी हुए एक साम्यवादी को 'अच्छा' आदमी कहने की गलती कर दी। मसानी ने उत्तर दिया, "मेरे दोस्त एक अच्छा साम्यवादी जैसी कोई चीज होती ही नहीं है। एक अच्छा साम्यवादी एक मृत साम्यवादी हो सकता है।"

साम्यवादी-विरोधी जंग

अपनी पुस्तक *"दि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया: शॉर्ट हिस्ट्री"* में अंतिम अध्याय में मसानी ने लिखा है, "भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी एक ऐसी कटार है, जिसकी धार अपनी म्यान से बाहर निकलकर विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश के लोकतंत्र के हृदय की ओर रखी हुई है। इसकी भूमिका राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को अव्यवस्थित करना, बौद्धिक भ्रम पैदा करना, मुख्य पदों पर घुसपैठ करना तथा ऐसे दिन की तैयारी करना है जब राष्ट्रीय आपातकाल अथवा अंतरराष्ट्रीय संकट के चलते यह प्रतिरोध करने की इच्छाशक्ति को नष्ट कर सके। केवल उद्देश्यपूर्ण लोकतांत्रिक नेतृत्व के साथ ही, जो देश को आंतरिक नेतृत्व के साथ ही, जो देश को आंतरिक एवं बाहरी संकटों के खिलाफ सुरक्षित रख सके, भारत इस चुनौती का मुकाबला कर सकता है।"(25)

वे शीत युद्ध के वर्ष थे जब सोवियत संघ ने अपने हितों को समूचे विश्व में प्रोत्साहित करने तथा लोकतांत्रिक अथवा गैर-साम्यवादी संगठनों पर कब्जा करने अथवा उन्हें नष्ट करने के लिए अग्रणी संगठनों को प्रायोजित किया। उदाहरण के लिए, वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन्स (डब्ल्यूएफटीयू) समूचे विश्व में व्यापार संघ संगठनों की एक यथार्थवादी फेडरेशन था। जब सोवियत के साम्यवादी इस संगठन पर कब्जा जमाने में सफल रहे तथा सोवियत संघ की बोली लगा दी, तो पश्चिमी राष्ट्रों ने इंटरनेशनल को फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन (आइसीएफटीयू) की स्थापना कर दी। भारत में, अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस वास्तव में सीएसपी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से संबद्ध एक संस्था थी। सीपीआई इस संगठन पर कब्जा करने में सफल रहा तथा कांग्रेस पार्टी को एक नया ट्रेड यूनियन संगठन स्थापित करना पड़ा। इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस (आइएनटीयूसी)। लेखकों, कलाकारों तथा बौद्धिक व्यक्तियों के संगठन साम्यवादियों के विशेष निशाने पर थे जिनमें वे घुसपैठ करके कब्जा जमाना चाहते थे। इसके लिए, पश्चिम ने पेरिस में स्थित कांग्रेस फॉर कल्चरल फ्रीडम की स्थापना करके जवाब दिया। भारत में, मसानी ने जयप्रकाश नारायण, अशोक मेहता और ए.डी. गोखले के साथ मिलकर 1950 में भारतीय सांस्कृतिक स्वतंत्रता समिति की स्थापना की और इसे पेरिस स्थित कांग्रेस से सहयोजित कर दिया।

स्वतंत्रता के पूर्व वे वर्षों के दौरान, एक समाजवादी स्वतंत्रता सेनानी के रूप में मसानी ने अनेक असवरों पर सरदार पटेल को नाराज किया था। एक समाजवादी से गांधीवादी बनने की प्रक्रिया ने मसानी को सरदार पटेल के निकट ला दिया था। स्वतंत्रता के तुरंत पश्चात भारत के उप-प्रधानमंत्री के रूप में तथा देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए उत्तरदायी मंत्री के तौर पर सरदार ने देश में साम्यवादी गतिविधियों से लड़ने के लिए दृढ़ प्रयास किए। इसके लिए उन्हें मसानी के रूप में एक उपयोगी सहायक प्राप्त मिला।

वर्ष 1950 के आसपास, सरदार पटेल ने मुझसे एक चर्चा के दौरान शिकायत की कि प्रधानमंत्री उन्हें उस तरह के सुरक्षा उपाय अपनाने की अनुमति नहीं दे रहे हैं, जिस तरह से सुरक्षा उपाय अपनाना चाहते हैं। मैंने उनसे पूछा कि क्या यह मददगार होगा यदि बुद्धिजीवी वर्ग के मध्य हो

रहे साम्यवादी विनाश से लड़ने के लिए एक गैर-अधिकारिक आधार पर एक छोटा शोध एवं सूचना केंद्र स्थापित कर दिया जाएगा। पटेल ने इसे एक बहुत अच्छा विचार माना तथा वे इसके लिए सहायता के लिए तैयार हो गए।"(27)

और जो सहायता उन्होंने की वह थी मुंबई में मसानी के लिए एक कार्यालय की जगह हासिल करना, एक टेलीफोन कनेक्शन तथा 10,000 रु. प्रदान करना। और इस प्रकार, लोकतांत्रिक शोध सेवा (डीआरएस) नवंबर, 1950 में स्थापित हुई। डीआरएस का मुख्य कार्य 16 पृष्ठीय मासिक पत्रिका *'फ्रीडम फर्स्ट'* का प्रचार तथा प्रकाशन का जिसने आने वाले 35 वर्षों तक मास्को में आधारित अंतरराष्ट्रीय साम्यवादी आंदोलन का पर्दाफाश करना तथा भारत में उनके पांचेवें स्तंभ की गतिविधियों पर नजर रखने का अनथक कार्य किया।(28)

परंतु न केवल भारतीय को बल्कि अधिकारिक सुरक्षा एजेंसियों को शिक्षित करने का महत्वपूर्ण कार्य डीआरएस द्वारा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) के गोपनीय दस्तावेजों का प्रकाशन किया जाना था, जिसे एक गुप्तचर की सहायता से किया जाना था, जो सीपीआई की केंद्रीय समिति का सदस्य था तथा यह कार्य भी बहुत ही लाभप्रद था। उसका सीपीआई तथा सोवियत संघ से मोहभंग हो चुका था तथा उसने यह निर्णय लिया था कि वह पार्टी से इस्तीफा देने के स्थान पर वह पार्टी में बना रहेगा तथा गोपनीय दस्तावेज मसानी तक पहुंचाकर मसानी की सहायता करेगा।" लोकतांत्रिक शोध सेवा पुलिस सहित अन्य सभी लोगों को अपनी सामग्री प्रकाशित करके तथा उसे प्रेस में पहुंचाकर सतर्क करने में सफल रही।" जब डीआरएस से पार्टी के मरें और पालाधार सम्मेलनों के गुप्त दस्तावेज प्रकाशित किए तो पार्टी उन्हें चुनौती देने की हिम्मत नहीं जुटा पाई।(29)

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि डीआरएस को नेहरू द्वारा अच्छी नजर से नहीं देखा जाता था। नवंबर 1956 में सोवियत सेनाओं ने हंगरी के लोगों द्वारा किए गए विद्रोह को कुचल दिया तथा नेहरू की सरकार यह तय करने में समर्थ नहीं थी कि सोवियत की कार्रवाई की भर्त्सना की जाए अथवा नहीं (अंतत: उन्होंने भर्त्सना नहीं की) तो इस मुद्दे पर लोकसभा में बहस हुई। अपने भाषण के दौरान नेहरू ने अपनी सरकार की प्रक्रिया का बचाव किया। परंतु उन्होंने डीआरएस द्वारा

आरंभ किए गए आंदोलन पर आक्रमण करने में चूक नहीं की तथा इसे "सरकार को नष्ट करन देने वाला एक सुविधाजनक उपकरण" की संज्ञा दी। जयप्रकाश नारायण ने डीआरएस का बचाव किया तथा कहा, "इस संगठन का उद्देश्य सरकार को नष्ट करना नहीं है, जैसा श्री नेहरू ने कहा है, बल्कि इस देश के लोगों को लोकतंत्र में शिक्षित करना है।"(30)

स्वाभाविक रूप से, साम्यवादी तथा उनके साथ चलने वाले साथियों ने मसानी के विरुद्ध मिथ्या आरोप लगाने का अभियान छेड़ दिया तथा उन्हें "अमेरिकी साम्रायवाद का एजेंट", एक "सीआईए एजेंट" आदि की संज्ञा दी। यहां तक कि उनके अच्छे मित्रों ने भी उन पर आरोप लगाया कि वे हर बिस्तर के नीचे एक साम्यवादी देखते हैं। परंतु ऐसे आरोपों ने उन्हें ऐसे समूह के विरुद्ध छेड़े अपने अनवरत जिहाद ने डिगाया नहीं, जिन्हें वे स्वतंत्रता का शत्रु समझते थे।

जबकि सत्तारूढ़ स्थापना से संबंधित अनेक सदस्य सार्वजनिक रूप से कुछ नहीं कहते थे, परंतु वे गोपनीय रूप से मसानी के पास आते थे तथा उन्हें बताते थे कि वे अपने पांचवें स्तंभ के माध्यम से भारत में सोवियत संघ की गतिविधियों को उजागर करके एक अच्छा कार्य कर रहे हैं तथा उन्हें इस बात की खुशी है। उनमें से एक के बारे में मुझे याद है कि मसानी ने मुझे बताया था, एस.के. पाटिल थे, जो उस समय मुंबई में कांग्रेस के एक बड़े नेता थे।(31)

मास्को से आने वाली बेशुमार खबरों तथा सोवियत साम्राज्य के पतन के पश्चात तत्कालीन सोवियत के अन्य स्थानों की राजधानियों से प्राप्त होने वाली खबरों ने मीनू मसानी के उन आरोपों की प्रामाणिकता को सिद्ध कर दिया तथा वे उस साम्यवाद-विरोधी जिहाद में कितने सफल थे, इस बात की पुष्टि भी कर दी।

वर्ष 1994 के प्रारंभ में, एक सुप्रसिद्ध पत्रकार तथा स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उनका एक सहयोगी (मसानी के अनुसार वह सीपीआई का कार्डधारक था) मुंबई से गुजर रहा था। वह मसानी से मिलने पहुंचा। वह पत्रकार सोवियत साम्राज्य के टूटने के पश्चता रूस तथा पूर्वी यूरोप के दौरे से लौटा था। उसने मसानी की सोवियत साम्यवाद की वास्तविक प्रकृति का सटीक मूल्यांकन करने के लिए प्रशंसा की तथा यह बात स्वीकार की कि वह गलत था और मसानी ही सही थे। मसानी इस बात से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने उस पत्रकार मित्र से कहा कि वे साम्यवाद में

उनकी आस्था को सार्वजनिक रूप से 'वापस' लें तथा 'इस बात को स्वीकार करें', ठीक वैसे ही वैसे जयप्रकाश नारायण ने अनेक वर्ष पूर्व 'फ्रीडम फर्स्ट' के लिए लिखे गए एक लेख में मार्क्सवाद की सार्वजनिक रूप से भर्त्सना की थी।(32)

हालांकि मसानी ने मार्क्सवादी बनना छोड़ दिया था, परंतु वे उन शब्दों का प्रयोग करते रहे जो साम्यवादियों के बीच प्रचलित थे। ऐसे दो शब्द हैं 'वापस लेना' तथा 'स्वीकार करना'। उनके मित्र कहते थे कि वे ऐसा नहीं कर सकते हैं तथा अपने जीवन की इस अवस्था में अपनी वास्ता नहीं छोड़ सकते हैं।" तब मसानी उन पर ही ताना मारते थे, "तुम अभी तक स्वस्थ नहीं हुए हो," हालांकि यही मित्र अपनी गलती स्वीकार करने के तौर पर मसानी के पास फ्रीडम फर्स्ट के लिए 'आजीवन अंशदान' के रूप में 500 रु. छोड़कर चला गया था।

अंतरराष्ट्रीय साम्यवाद के समाप्त होने पर मसानी ने निर्णय लिया कि अब कोई कारण नहीं है कि डीआरएस को जारी रखा जाए। अपने मित्रों के साथ परामर्श करके जो डीआरएस के लिए सहयोग किया करते थे, उन्होंने उस संगठन को समाप्त कर दिया। हालांकि फ्रीडम फर्स्ट जारी रही तथा उसने अपना मुख्य ध्यान साम्यवाद विरोध से हटाकर अधिक सकारात्मक विषय उदारवादी विचारों की तिमाही' पर लगा दिया था, वह भारतीय सांस्कृति स्वतंत्रता समिति के प्रकाशन के रूप में स्थापित हो गई।

जैसा पहले उल्लेख किया गया है, सीएसपी से त्यागपत्र देने तथा उसकी बढ़िया बिकने वाली पुस्तक *'अवर इंडिया'* को लिखने के पश्चात मसानी ने लाभप्रद रोजगार की तलाश करनी शरू कर दी थी। उनके पिता उन्हें ए.डी. श्रॉफ से मिलवाने ले गए, जो उन्हें जे.आर.डी. टाटा के पास ले गए तथा टाटा ने उन्हें टाटा ग्रुप ऑफ कंपनीज के मुख्यालय बॉम्बे हाउस में एक नौकरी दे दी।

जीवन-यापन करना

अगले 16 वर्षों तक, 1941 से 1957 तक वे दो अंतरालों में हाउस ऑफ टाटा के साथ जुड़े रहे। पहला अंतराल 1943 में कुछ ही समय के लिए था जब उन्हें भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गिरफ्तार कर लिया गया था तथा दूसरा 1948 से 1949 तक एक वर्ष के लिए था, जब वे ब्राजील में भारत के पहले राजदूत बने थे। जब वे टाटा में थे, तो साथ-ही साथ वे मुंबई के मेयर

भी थे, भारतीय विधानमंडल सभा के सदस्य, जिसने स्वयं को संविधान का मसौदा तैयार करने के लिए संविधान सभा में तब्दील कर दिया था।(33) बाद में वे अंतरिम सरकार के सदस्य रहे।(34) संयुक्त राष्ट्र अल्पसंख्यक भेदभाव निवारण और संरक्षण उप-आयोग में 1947 से 1952 तक भारत सरकार के प्रतिनिधि रहे तथा अंतिम दो वर्षों में इसके अध्यक्ष भी रहे। यहां पर उनके नेहरू के साथ विशेष रूप से विदेश नीति के मुद्दे पर मतभेद अनंतिम संसद में हुई बहस के दौरान खुलकर सामने आए। कांग्रेस संसदीय पार्टी की चर्चाओं में मसानी ने अनिवार्यत: सरदार पटेल का समर्थन किया जिसकी वजह से नेहरू नाखुश हुए। सरदार पटेल का निधन 15 दिसंबर, 1950 को हुआ। वर्ष 1952 में, जब अनंतिम संसद भंग हुई, तो मसानी ने कांग्रेस पार्टी से त्यागपत्र दे दिया। वे लगभग 20 वर्षों तक इसके सदस्य रहे।

ब्राजील में भारत के राजदूत के रूप में उनके कार्य के विषय में, मुझे याद है कि मैंने मसानी से पूछा था कि वे संविधान सभा को छोड़ने तथा पहली पसंद के तौर पर ब्राजील में राजदूत बनने के लिए क्यों राजी हो गए। उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें दृढ़ बने रहने चाहिए था तथा इस कार्य को स्वीकार करने के लिए राजी नहीं होना चाहिए था। सच बात तो यह है कि उनका उत्तर संतोषजनक नहीं था, परंतु उन्होंने इसके बारे में केवल इतना ही कहा।

अपने राजदूत के कार्य की समाप्ति पर वे 1949 में टाटा में वापस लौट आए। कांग्रेस पार्टी से दिए गए उनके त्यागपत्र ने सक्रिय राजनीति से उनकी दूसरी सेवानिवृत्ति का संकेत दिया। यह बात वर्ष 1956 तक चली, जब वे लोकसभा के लिए एक स्वतंत्र उम्मीदवार के लिए खड़े हुए। इसके बीच की अवधि में वे पूर्णकालिक व्यवसायिक कार्यपालक, एक साम्यवाद-विरोधी जिहादी, पुस्तकों के लेखक विशेष रूप से बच्चों के लिए तथा एक काफी पसंद किए जाने वाले वक्ता थे।

टाटा में मसानी द्वारा किए गए कार्य तथा टाटा संगठन के लिए उनके योगदान के बारे में जे.आर.डी. टाटा ने लिखा है:

टाटा में, मीनू ने अनेक प्रकार की भूमिकाएं निभाईं, तथा वे हमेशा ही सक्षमता और लगन से कार्य करते रहे, उन्होंने एक अत्यंत उल्लेखनीय अनुकूलनता प्रदर्शित की तथा अपने विचारों, कार्यों तथा समस्याओं का निष्पादन करने के लिए उन्होंने उस क्षमता से बिलकुल अलग प्रकार से कार्य

किया, जिस क्षमता के साथ वे इससे पूवे अपने कार्यों को किया करते होंगे। हालांकि, मैं टाटा के दल में उनके साथ बहुत प्रसन्न था, परंतु मैं उस समय अत्यंत प्रसन्न हुआ जब प्रधानमंत्री ने उन्हें वर्ष 1948 में ब्राजील का राजदूत बना दिया क्योंकि उसे आशा थी कि ऐसा उन्होंने राष्ट्रीय हित में किया था और मैं समझता था कि वापस आकर उन्हें सरकार के भीतर ही और अधिक महत्वपूर्ण कार्य सौंपे जाएंगे। परंतु ऐसा नहीं हुआ, जिसकी मुख्य वजह उनका अत्यंत मजबूत स्वतंत्र चरित्र था राजनैतिक विचारधारा के प्रति उनके कट्टरवादी परिवर्तन के अविश्वास ने उन्हें कांग्रेस पार्टी के लिए अस्वीकार्य बना दिया था। वास्तव में मीनू सरकार में एक भिन्न सहयोगी साबित होते तथा जो कि एक ऐसी सरकार और पार्टी थी, जो मार्क्सवादी सहयोगियों से अत्यदिक भरी पड़ी थी।

अत: मीनू वापस टाटा में आ गए जहां ग्रुप के जनसंपर्क विभाग के प्रभारी के रूप में उन्होंने अत्यंत मूल्यवाद भूमिकाएं निभाईं, प्रबंधन में सलाहकार के रूप में, उद्योग में मानव संबंधों पर, कार्मिकों तथा श्रमिकों की समस्याओं पर, जिसके लिए ट्रेड यूनियन के क्षेत्र में उनके पूर्व के अनुभव ने उन्हें अत्यंत सहायक बना। वास्तव में, मैंने उनके दृष्टिकोणों तथा परामर्श को अपने लिए इतना अधिक उपयोगी पाया कि मैंने उन्हें अपने सचिवालय में शेफ द कैबिनेट के पद पर नियुक्त कर लिया जहां मैं उनके व्यावहारिक और अत्यंत सक्रिय मस्तिष्क का, कमियों तथा कार्यों पर उनके विविध एवं विशाल अनुभव का, इतिहास की उनकी समझ का, उनकी लेखन-क्षमता का तथा अंग्रेजी में उनकी महारथ का पूरा-पूरा लाभ उठा सकता था। मेरे पास उनसे बेहतर विकल्प कोई नहीं था।

कुल मिलाकर मीनू... एक अत्यंत उत्कृष्ट व्यक्ति थे जिनके गुणों तथा चरित्र, भारत के लिए दुर्भाग्य की बात है, की पहचान न हो सकी और उनका उपयोग न हो सका चूंकि इनका इस्तेमाल देश के लिए अत्यंत लाभप्रद सिद्ध हो सकता था।"(37)

आजादी के नौ वर्ष पश्चात, ऐसे अनेक लोग थे जिन्हें मोटे तौर पर जनता की राय समझने वाले नेता कहा जा सकता था तथा वे उस दिशा को देखकर अत्यंत बेचैन थे, जिस पर कांग्रेस देश को लेकर जा रही थी। पहली पंचवर्षीय योजना (1952-57) सही दिशा में थी, जिसमें कृषि पर बल

दिया गया था। परंतु दूसरी पंचवर्षीय योजना (1957-63) मास्को के गोस्पलान पर आधारित थी तथा राज्य-पूंजीवाद पर आधारित थी। कामरेड प्रोफेसर पी.सी. महलानोविस अपने भौतिक लक्ष्यों द्वारा आयोजना की "दवा" लेकर इसमें शामिल हो गए थे। प्रो. बी.आर. शिनॉय, जो महालानोविस मॉडल के पूरी तरह विरोधी थे तथा मुक्त बाजार के दृढ़ समर्थक थे और वे घाटे की वित्त-व्यवस्था के पूर्णत: खिलाफ थे तथा इस बात के भी पक्षधर नहीं थे कि राज्य अर्थव्यवस्था की ऊंचाइयों पर नियंत्रण कर ले, बाहर कर दिए गए।(38) प्रोफेसर शिनॉय, योजना आयोग के सदस्य तथा एक उदारवादी अर्थशास्त्री ने अपने असंतोष के विषय में एक पत्र लिखकर दिया और इसी से उनके योजना आयोग की सदस्यता की छुट्टी हो गई। मद्रास में, सत्याग्रह में राजाजी के स्तंभ तथा लेख बत ही उग्र होते जा रहे थे। राजाजी ने भी कांग्रेस में अपनी सदस्यता का नवीकरण नहीं कराया था।(39) "चूंकि कांग्रेस पार्टी वामपंथियों की ओर झुक गई थी, तो आज की निकाय-राजनीति को जिस बात की आश्यकता है, वह कमजोर अथवा बाहरी वामपंथ नहीं है, बल्कि एक मजबूत और दृढ़ दक्षिण पंथ है", उन्होंने स्वराज में लिखा।(40)

एक नई पार्टी की ओर

इसी दौरान मसानी भी अपने मित्रों के साथ, इन्हीं चिंताओं पर चर्चा कर रहे थे। "हमने महसूस किया कि अब समय आ गया है जब एक नई राजनैतिक पहल की जाए जिसके द्वारा विभिन्न समाजवादी तथा साम्यवादी पार्टियों द्वारा स्थापित किए गए एकाधिकार को तोड़ा जा सके। हमारी समझ में यह परिस्थिति अब पूरी तरह परिपक्व हो चुकी है कि एक उदारवादी लोकतांत्रिक पार्टी का गठन किया जाए जिसका ऐसा कार्यक्रम हो, जो सामूहिक आनंदधाम के विभिन्न संस्करणों से भिन्न हो, जिसे आजादी के बाद से भारतीय लोगों को प्रस्तुत किया जा रहा है।"(41) परंतु दूसरे आम चुनाव पास आ गए थे तथा एक नए दल को संगठित करने का समय नहीं बचा था।

अत: मसानी और उनके मित्रों ने एक अलग चीज करने का फैसला किया वर्ष 1957 के लोकसभा चुनावों में कुछ स्वतंत्र प्रत्याशी खड़े करना। ऐसा करना एक अभ्यास करने अथवा समय को परखने के समान होगा क्योंकि ऐसा उस कार्य को किए जाने से पूर्व किया जा रहा था, जो नई उदारवादी पार्टी का गठन था। निम्नलिखित उम्मीदवारों के रूप में इन चुनावों में भाग लिया।

राजस्थान में होमी मोदी, उत्तर प्रदेश में एस. गोयल, आंध्र में आर.वी. मूत, उड़ीसा में एच.आर. पर्धीवाला, जमशेदपुर में एटिक डी कोस्टा तथा रांची में मसानी। इनमें से मसानी ही लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए। उनका समर्थन झरखंड पार्टी द्वारा किया गया था। उनके चुनाव के साथ ही, स्वतंत्रता के पश्चात पहली बार लोकसभा में एक उदारवादी आवाज सुनाई दी थी।

और इसी के साथ मसानी का राजनीति में तीसरी बार प्रवेश हुआ। परंतु इस निर्वाचन ने उनकी टाटा की नौकरी छुड़वा दी। जे.आर.डी. टाटा ने सार्वजनिक हित में मसानी के निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने को अनुमोदन तो दे दिया था, परंतु उन्हें कह दिया था कि यदि वे लोकसभा के लिए चुने गए और नेहरू सरकार के विपक्ष में एक स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में भी बैठे, तो उन्हें टाटा संगठन से त्यागपत्र देना पड़ेगा क्योंकि "ऐसा निर्णय टाटा ग्रुप ऑफ कंपनीज के शेयरधारकों के हित में होगा।"(42) मसानी इस लोकोक्ति में दृढ़ विश्वास रखते थे कि आप "राजनीति के लिए जीते हैं, राजनीति से दूर रहकर नहीं", और उन्होंने वहां पर एक प्रबंधन परामर्शक के रूप में स्थापित किया था, तथा कार्मिक प्रबंधन, औद्योगिक संबंध, प्रबंधकीय प्रशिक्षण और विकास एवं जनसंपर्क में विशेज्ञता प्राप्त की थी। जे.आर.डी. टाटा ने उन्हें कार्यालय परिसर तलाशने में उनकी सहायता की जहां से उन्होंने अगले 22 वर्षों तक अपने व्यवसाय का संचालन किया । उनकी परामर्शदात्री फर्म, कार्मिक एवं उत्पादकता सेवाओं ने बहुत अच्छा कार्य किया। वर्ष 1979 में उन्होंने अपनी कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज को बेच दी।

जैसे ही उन्होंने स्वयं को अपने चिर-परिचित शिकार के मैदान अर्थात संसद में पाया, उन्होंने सदन में और उसके बाहर अपनी ही विचारधारा के लोगों की तलाश करने में कोई समय व्यर्थ नहीं किया। यह उदारवादी लोकतांत्रिक पार्टी के गठन की ओर उनका पहला कदम था। संसद में, उन्होंने दो अन्य सांसदों के साथ मिलकर स्वतंत्र संसदीय ग्रुप का गठन किया। उसके बाहर, उन्होंने अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ राजाजी तथा जयप्रकाश नारायण को प्रेरित किया। मित्रों का एक समूह पैसा था जिन्हें प्रेरित करने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी थी, और वह उनके सीएसपी के पूर्व-सहयोगी थे। स्वतंत्रता के एकदम बाद, जयप्रकाश नारायण ने 'कांग्रेस' त्याग दी और कांग्रेस समाजवादी पार्टी का गठन कर लिया, तथा 1952 के चुनावों में नेहरू और कांग्रेस को बड़ी चुनौती

दी। समाजवादी पार्टी की रैलियों में काफी लोग भाग लेते थे तथा वे कांग्रेस द्वारा आयोजित की जाने वाली रैलियों की भांति ही भव्य होती थीं। परंतु जब परिणाम आए, समाजवादियों को नेहरू के हाथों भारी हार झेलनी पड़ी। कुछ समय पश्चात् समाजवादी पार्टी के दो भाग हो गए, एक में वे लोग थे जो डॉ. राम मनोहर लोहिया के निष्ठावान थे तथा दूसरे में वे, जो जे.पी. के समर्थक थे। इस प्रकार, लोहिया की संयुक्त समाजवादी पार्टी (एमएसपी) बन गई तथा जे.पी. की प्रजा समाजवादी पार्टी (पीएसपी)। जे.पी. ने स्वयं दलगत राजनीति का त्याग कर दिया और स्वयं को सर्वोदय आंदोलन में लगा दिया।

मसानी के अधिकांश तत्कालीन सहयोगी पीएसपी में थे। उन्होंने गंगा शरण सिंह, जिन्हें गंगा बाबू के नाम से जाना जाता था, को पत्र लिखते का निर्णय लिया जो उस समय प्रजा समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष थे। अपने पत्र में मसानी ने कहा कि वे तथा उनके मित्र उदारवादी प्रकृति की एक नई पार्टी का गठन करने की दिशा में सोच रहे हैं तथा उन्होंने उन कारणों का भी उल्लेख किया जो इस घटनाक्रम के लिए अनिवार्य बन गए थे। उन्होंने यह भी कहा कि जहां तक बुनियादी दृष्टिकोणों का संबंध है, उनके तथा पीएसपी के समाजवादी लोकतांत्रिक नेताओं के बीच बड़ी मात्रा में समान लक्ष्य मौजूद हैं। मसानी ने पूछा, "क्या हम ऐसा नहीं कर सकते हैं, आइए एक साथ मिल जाएं तथा राष्ट्रीय लोकतांत्रिक चरित्र वाली एक नई पार्टी का गठन करें। मसानी ने यह भी सुझव दिया कि "पीएसपी को 'समाजवाद' का तगमा उतार देना चाहिए" तथा मसानी अपनी भूमिका में सामाजिक-न्याय तथा नई पार्टी में समाजवाद के उद्देश्यों को स्वीकारने में एक लंबी दूरी तक जाने के लिए तैयार हैं।" गंगा बाबू ने मसानी को मौखिक उत्तर दिया कि उनका सुझाव "व्यावहारिक समीकरण" नहीं है। पार्टी का दर्जा तथा उनके नेता समाजवादी विचारधारा अथवा उसके तगमे के प्रति इतने समर्पित हैं कि यदि ऐसा कोई प्रयास किया गया, तो वे इस प्रयास को अवश्य ही असफल कर देंगे." यह बात उन्होंने अपनी जीवनी में भी लिखी है।(43) निराश मसानी ने अत्यंत दुख के साथ यह देखा कि भारत के समाजवादी नेताओं की तुलना में अभी भी कई मायनों में काफी पीछे हैं। उन्होंने यह कल्पना की कि "कौन जानता है कि उस समय क्या हो सकता था यदि भारत में उदारवादियों और लोकतांत्रिक समाजवादियों ने उस मौके पर आपस में

समझौता कर लिया होता। भारत का सारा इतिहास बिलकुल अलग और बेहतरीन हो सकता था।" साथ ही उन्होंने यह भी लिखा कि, "निश्चित तौर पर देश में 1970 की वैकल्पिक सरकार की दु:खद असफलता को टाला जा सकता था। मैंने सदा ही यह महसूस किया है कि "वामपंथियों" की रूढ़िवादिता "दक्षिणपंथियों" की रूढ़िवादिता की तुलना में हानिकारक है। अच्छे व्यक्तियों द्वारा अपने निशाने को पुराने दुश्मनों से हटाकर नए दुश्मनों पर साधने में उनकी असमर्थता के परिणामस्वरूप ही अनेक नुक्सान भुगतने पड़े हैं, तथा यह उनमें से एक है।"(44)

स्वतंत्रता पार्टी का उदय

हालांकि राजाजी तथा मसानी ने उस स्थिति में यदि कांग्रेस का शासन बिना चुनौती के चलता रहा भारत के भविष्य के विषय में समान चिंताएं व्यक्त करनी शुरू कर दी थी, राजाजी ने खराब सेहत तथा वृद्धावस्था के आधार पर निरंतर इस बात को टाला, जब कभी मसानी ने उनसे नई पार्टी के गठन के लिए किए जा रहे प्रयासों में उनका सहयोग मांगा। जयप्रकाश नारायण ने भी क्षमा मांग ली क्योंकि वे दल विहीन लोकतंत्र पर विश्वास करते थे और सर्वोदय आंदोलन में लगे हुए थे। मसानी के मन में रह बात स्पष्ट थी कि इन दोनों के बिना नई पार्टी की शुरुआत नहीं की जा सकती है। वे इस बात को बड़ी ही ईमानदारी के साथ स्वीकार कर गए कि एक नई पार्टी का नेतृत्व करने की योयताएं उनमें नहीं हैं। उन्होंने अपनी जीवनी में लिखा है, "मेरे मन में इस बात को लेकर कभी भी कोई भ्रांति नहीं थी कि इस प्रयोजन के लिए भारत जैसे देश में अपेक्षित राजनैतिक अपील का मेरे अंदर अभाव था। मैंने भारतीय राजनीति में हमेश अपना स्थान एक प्रभावशाली द्वितीय स्थान के नेता के रूप में देखा है जो मशीन को कार्यकुशलता के साथ चला सका है, वहां ऐसे नेता उपलब्ध करा सकता है जिसमें आवश्यक योयता हो। ऐसी ही एक भूमिका मैं 1930 में जे.पी. के साथ तथा राजाजी के साथ 1960 में निभाने में सफल रहा।"

भारत में एक स्वीकार्य नेता के विषय में मसानी की परिभाषा थी "एक घरेलू तथा जमीन से जुड़ी व्यक्तित्व जिसकी भारतीय परंपरा में गहरी जड़े हों "जो कि मसानी स्वीकार करते हैं, उनके पास नहीं था। और ये बात प्रतिबिंबित कैसे होती है? यह बात व्यक्ति की जीवन-शैली, उसकी वेशभूषा, कुछ हद तक मितव्यता और तथाकथित "पश्चिमी" आदतों जैसे मद्यपान और पार्टियों में नृत्य

करना, से दूर रहने से परिलक्षित होती है। वे महसूस करते थे कि वे "काफी हद तक ऐसे विश्व के नागरिक हैं जिसका वर्णन स्टालिन ने "जड़विहीन महानगरवासियों" के रूप में किया है तथा इस कारण वे भारतीय सरकार में प्रधानता की भूमिका निभाने में सक्षम नहीं हैं।"(45)

इस दौरान, इन पार्टी के गठन का कार्य लंबित रहने के ही बीच उन्होंने इकलौते विपक्ष की भूमिका निभाई। संभवत: मसानी पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने लोकसभा में द्वितीय पंचवर्षीय योजना की सामने से आलोचना की थी। यह अवसर केंद्रीय बजट 1957-58 का था। उन्होंने पंचवर्षीय योजना को बुराई का स्रोत के रूप में वर्णित किया था तथा कहा था कि यह बजट वित्तीय संसाधनों को जुटाने का एक उपकरण है, जिन्हें ये योजनाएं निगल लेंगी। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में भारत के प्रतिनिधि की हैसियत से भेजे गए कृष्णा मेनन द्वारा "उकसाने वाले भाषणों तथा भाव-भंगिमाओं" के कारण भारत की छवि को हुए नुक्सान की ओर भी ध्यान आकर्षित किया। दूसरी ओर, उन्होंने नंबूदिरीपाद की सरकार को बर्खास्त करने तथा केरल में राष्ट्रपति शासन लगाने का समर्थन किया। पंचवर्षीय योजना तथा कृष्णा मेनन की आलोचना ने नेहरू को नाराज कर दिया तथा केरल में साम्यवादी सरकार को बाहर निकालने में उनके नेहरू को दिए गए समर्थन से साम्यवादी उनसे रुष्ट हो गए। वे उस तरीके के लिए एक आधार तैयार कर रहे थे जिसके अनुसार उनकी नई पार्टी विपक्ष की पार्टी के रूप में कार्य करेगी। केवल विरोध करने के लिए ही वे विपक्षी पार्टी का गठन नहीं कर रहे थे, परंतु उनका लक्ष्य निर्माणात्मक मुद्दा-आधारित विपक्ष था। मसानी भारत की संसद में "तत्रमहती के विपक्ष " की अवधारणा को आरंभ करने का प्रयास कर रहे थे।

और उसी समय वह अवसर आया जिसके लिए मसानी प्रतीक्षा कर रहे थे, एक ऐसी गतिविधि हुई जो नई पार्टी का गठन करने के उनके प्रयासों में शामिल होने वालों के लिए भूमिका बन गई। अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक 1959 में नागपुर में हुई तथा उसने 'नागपुर संकल्प' अंगीकार किया, जो संयुक्त सहकारिता कृषि तथा भूमि पर सीमा अधिरोपित करने के बारे में था। संसद में दिए गए एक भाषण में, मसानी ने एआईसीसी के इस संकल्प की निंदा की तथा यह कहा कि भारत के किसान इस निर्णय के विरुद्ध संघर्ष करेंगे, जो वास्तव में भारतीय कृषि का सामूहिकीकरण करने का एक कदम है । जब वे यह बात कह रहे थे तो वे इस बात को जानते थे

कि कांग्रेस की ओर बैठे अनेक सदस्य भी नागपुर संकल्प का विरोध कर रहे थे, परंतु वे नेहरू को प्रकोप को भड़काने के भय से इस बात को इतने खुलेपन से कहने के लिए तैंयार नहीं थे, तभी प्रो. एन.जी. रंगा चर्चा में कूद पड़े और उन्होंने नागपुर संकल्प पर अपने विरोध की घोषणा कर दी। इसके तुरंत बाद उन्होंने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया।

फार्मर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया इसके विरोध में उठ खड़ा हुआ तथा फोरम ऑफ फ्री इंटरप्राइजेज के साथ सहयोग में, जो उद्योग एवं वाणिय में लाइसेंस तथा परमिट राज के विरुद्ध पहले ही संघर्ष कर रहा था, एक ऐसी पार्टी के गठन के लिए सहायता करने के लिए तैयार हो गया जो किसानों के स्वामित्व तथा मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था के मुद्दे पर संघर्ष कर सके।

मसानी को 29, मई, 1959 को बंगलौर में आयोजित एक बैठक को संबोधित करने के लिए फोरम फॉर फ्री एंटरप्राइजेज के एम.ए. श्रीनिवासन द्वारा आंमत्रित किया गया, जिसकी अध्यक्षता राजाजी द्वारा की जानी थी। उस बैठक में वे दोनों नेता अत्यंत सौहार्द से मिले। अगले दिन 30 मई, 1959 को राजाजी ने मसानी से कहा कि अब एक नई पार्टी का गठन करने का समय आ गया है तथा यह भी कहा कि वे उसके गठन की घोषणा के लिए आयोजित की जाने वाली बैठक में शामिल होने के लिए तैयार हैं। "सार्वजनिक जीवन में समय अपना बदला लेने के लिए अनेक वर्ष लगा देता है। वर्ष 1937 में, राजाजी ने मेरे खिलाफ जवाहरलाल नेहरू से शिकायत की थी तथा वे कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में, मेरे बचाव के लिए आए थे। आज यहां हम 1959 में, जवाहर लाल के विरोध में एक नई पार्टी का गठन कर रहे हैं।" मसानी ने यह बात अपनी जीवनी में लिखी।

एक सप्ताह पश्चात, 7 जून, 1959 को राजाजी ने मद्रास में एक बैठक आयोजित की जो नई पार्टी में शामिल होने वाले नेताओं के लिए एक गोपनीय बैठक थी तथा इसके बाद उसी शाम को एक सार्वजनिक बैठक भी आयोजित की गई। मसानी का विमान देरी से आया तथा उनके मद्रास पहुंचने तक गोपनीय बैठक में राजा जी द्वारा तैयार किए गए पार्टी के 21 सिद्धांत तैयार हो चुके थे तथा उन 21 सिद्धांतों और नई पार्टी के पदाधिकारियों के नामों की प्रेस विज्ञप्ति अभी जारी की जानी थी। मसानी सिद्धांतों से तो प्रसन्न थे परंतु वे पदाधिकारियों के नामों से निराश हुए तथा उन्होंने राजाजी से शिकायत की कि कुछ तो बहुत वृद्ध हैं अधिकांशत: दक्षिण से हैं। वे अध्यक्ष के

रूप में एन.जी. रंगा के चुनाव से भी निराश थे। मसानी यह आशा कर रहे थे कि राजाजी ही अध्यक्ष होते। हालांकि, उनके अनुरोध पर राजाजी इस बात के लिए सहमत हो गए कि पार्टी के जन्म-दिवस के रूप में मद्रास की बैठक पर विचार नहीं किया जाएगा तथा ऐसी तारीख का चयन किया जाएजा जब इसका औपचारिक समारोह आयोजित किया जा सके ताकि देश के अन्य भागों से भी लोग आ सकें और अधिक प्रतिनिधियों वाली आयोजन समिति गठित की जा सके। रंगा के विषय में, राजाजी ने मसानी को सूचित किया कि उनका पदधारण करने का कोई आशय नहीं है परंतु वे राष्ट्रीय कार्यकारिणी का सदस्य बने रहने के लिए तैयार हैं, उन्होंने इसके अध्यक्ष का पद जयप्रकाश नारायण को सौंपने का प्रस्ताव किया, जो उस दिन मद्रास में ही थे। जे.पी. ने 21 सिद्धांतों से अपनी पूरी सहमति जताई, परंतु वह प्रस्ताव इस आधार पर अस्वीकार कर दिया कि उन्होंने दलगत राजनीति से दूर रहने का निर्णय ले लिया है। इन परिस्थितियों में राजाजी ने महसूस किया कि अध्यक्ष का पद धारण करने के लिए रंगा ही सबसे योय व्यक्ति हैं, अत: राजाजी ने रंगा को अध्यक्ष बनने के लिए आमंत्रित किया। मसानी ने इस निर्णय को स्वीकार कर लिया तथा यह मामला यहीं समाप्त हो गया।

7 जून को मद्रास में आयोजित एक सार्वजनिक बैठक में राजाजी ने मसानी सहित सभी उपस्थित लोगों को आश्चर्यचकित करते हुए यह घोषणा की कि नई पार्टी का नाम स्वतंत्र पार्टी है।(47)

स्वतंत्र पार्टी के आरंभिक सम्मेलनों के रूप में इसका औपचारिक समारोह 1 और 2 अगस्त को बंबई में ऐसे स्थान पर आयोजित हुआ जो गोवलिया टैंक से यादा दूर नहीं था, जहां गांधीजी ने अगस्त में ही भारत छोड़ो अभियान आरंभ किया था। उस समय मानसून अपने प्रचंड पर था तथा बहुत तेज वर्षा हो ही थी। यह आंधी-तूफान भी उन 2000 लोगों को इस सम्मेलन में भाग लेने से नहीं रोक पाया, जो वहां उपस्थित थे। इनमें से 500 व्यक्ति भारत के अन्य भागों से आए थे।

मुझे भी इस घटना का स्मरण है क्योंकि मैं केरल वीकली के लिए एक पत्रकार के तौर पर वहां गया था। पूरा वातावरण काफी जोश में था। ऐसा लग रहा था, मानो स्वतंत्रता के लिए कोई आंदोलन शुरू किया जा रहा हो। मंच पर राजाजी के नेतृत्व में अनेक गणमान्य नेता बैठे थे, जिनमें एन.जी. रंगा, वी.पी. मेनन, के.एम. मुंशी, होमी मोदी, प्रो. एम. रत्नास्वामी, सरदार बहादुर

लाल सिंह, के.वी. जिनराजा हेगड़े, जे. एम. प्रभु आदि शामिल थे। आजादी के बाद पहली बार ऐसे भाषण सुने गए जो समाजवाद तथा उदारवादी दृष्टिकोण के साथ चलाई जा रही नेहरू की सरकार की आलोचना कर रहे थे। आयोजन समिति के अध्यक्ष के रूप में मसानी ने दिल्ली की सरकार के खिलाफ कड़ी आलोचना करते हुए जोशपूर्ण भाषण दिया। राजाजी भी कम प्रभावी नहीं थे तथा प्रो. रंगा, के.एम. मुंशी जैसे अन्य नेताओं ने भी इसी अंदाज में भाषण दिए. इस नई पार्टी के जन्म पर मसानी ने अपनी भूमिका का 'एक दाई' के रूप में वर्णन किया। यह एक बहुत ही सटीक वर्णन था। उन्होंने वस्तुत: एक स्वस्थ शिशु के जन्म में सहायता प्रदान की थी। इसके आरंभिक सम्मेलन में प्रेस की भारी मौजूदगी थी तथा अधिकांश संपादकियों ने एक ऐसी राजनैतिक पार्टी के गठन का स्वागत किया, जो अन्य पार्टियों से अलग थी।

पदाधिकारियों की जो सूची मद्रास में तैयार की गई थी तथा जिस संरचना पर मसानी अप्रसन्न थे, उसे संशोधित किया गया तथा उनमें देश के अन्य भागों से भी अनेक लोग शामिल किए गए, जो ऐसे उल्लेखनीय व्यक्तित्व थे, जिनका काफी नाम था। परंतु इसका केंद्रीय कार्यालय अभी भी मद्रास में ही था तथा उसके महासचिव एस.वाई. कृष्णास्वामी थे, जो एक सेवानिवृत्त आईसीएस अधिकारी थे। मसानी इस बात से स्पष्टतः संतुष्ट नहीं थे कि जिस पार्टी के गठन के लिए उन्होंने इतनी मेहनत की, उसमें 'मद्रास के लोगों का वर्चस्व बढ़ गया था..."

परंतु इसके फलस्वरूप उन्होंने पार्टी के लिए जनसंपर्क का कार्य करने में ढिलाई नहीं की। इसकी स्थापना के एक माह पश्चात, मसानी ने अपनी एक विदेश यात्रा के दौरान यह जाना कि बाहर के लोग स्वतंत्र पार्टी के जन्म को एक बड़ी घटना के रूप में देखते हैं। "कुछ हद तक यह रुचि लाइफ इंटरनेशनल में प्रकाशित मेरे लेख में तथा साथ ही लिबरल इंटरनेशल में मेरी रुचि में भी प्रतिबिंबित होती है।" मसानी का आस्ट्रिया रेडियो द्वारा साक्षात्कार लिया गया। उन्होंने एकांउटर पत्रिका द्वारा आयोजित 'संपादकों के गोपनीय' भोज में भी भाग लिया जिसमें द इकॉनामिस्ट, स्पेक्टेटर, डेली टेलीग्राफ, मैंचेस्टर गार्डियन, ऑब्जर्वर तथा द सोशल कमेंट्री के संपादकीय कर्मी भी उपस्थित थे। इन सभी बातों ने निश्चित ही विदेशों में पार्टी की छवि में वृद्धि की होगी।

महासचिव

देश वापस आने पर उन्हें सर होमी मोदी के माध्यम से राजाजी का संदेश प्राप्त हुआ कि वे पार्टी के महासचिव का पद संभाल लें। राजाजी के अनुरोध का उत्तर देते हुए मसानी ने कहा कि यदि वे प्रभावी ढंग से कार्य करेंगे, तो इसके लिए संगठनात्मक ढांचे के विषय में हर बात स्पष्ट होनी आवश्यक है। दूसरा कारण निजी था, क्योंकि उन्हें अपनी जीविका भी चलानी थी क्योंकि पार्टी का कार्य उनका वह सारा समय ले लेता जो समय वे अपने परामर्शक के व्यवसाय में लगाते थे। राजाजी ने उत्तर दिया, "वहां तक व्यक्तिगत समस्याओं का संबंध है, हमें उन्हें ठीक उसी तरह से झेलना है जैसे हमने वर्ष 1920 में किया था।"(49) वर्तमान संकट उतना ही बड़ा है, जितना हमने उस समय झेला था। महासचिव के रूप में आपकी ताकत तथा जिम्मेदारियां पार्टी के प्रशासन के समस्त क्षेत्र को तब तक संभाल लेंगी, जब तक हमारा संविधान पारित नहीं हो जाता है। यह बहुत केवल आपके स्वयं के विवेक द्वारा सीमित हो सकती है कि क्या आप दूसरों को अपने विश्वास में ले सकते हैं, मुझे और रंगा को, और वास्तव में आप हमें संतुष्ट करने के सभी प्रयास करेंगे। हम अपनी पार्टी की क्षमता को यथार्थ में कैसे परिवतत कर पाएंगे जब आप स्वयं को इस जिम्मेदारी में अपने समस्त साहस और अपनी क्षमता के साथ नहीं झोंकेंगे। राजाजी ने सुझव दिया कि केंद्रीय कार्यालय दिल्ली के स्थान पर बंबई में स्थित होना चाहिए तथा यह कहा, "हमें दिल्ली के विषय में केवल तभी सोचना चाहिए जब हमारे पास वहां 10 लाख की मजबूत संख्या में सदस्य हों।"(50) राजाजी वस्तुत: पार्टी चलाने के लिए मसानी को एक उचित संतुलन प्रदान कर रहे थे। इससे यह मामला सुलझ गया तथा 9 दिसंबर, 1951 को हैदराबाद में आयोजित पार्टी की महापरिषद में मसानी को स्वतंत्रता पार्टी का महासचिव चुन लिया गया।

ए.डी. श्रॉफ के सहयोग से पार्टी की बंबई इकाई ने काला घोड़ा में ससून भवन की पहली मंजिल से पहले ही कार्य करना शुरू कर दिया था, जो मसानी की परामर्शी फर्म के सामने वाली सड़क पर ही स्थित था। बंबई की इकाई ने अपने परिसर में इसके केंद्रीय कार्यालय को भी खपा लिया।

मैंने मसानी को पत्र लिखकर केंद्रीय कार्यालय में सचिव का पद ग्रहण करने की इच्छा जताई। उन्होंने मुझे एक साक्षात्कार के लिए बुलाया तथा 30 मिनट तक चले उस साक्षात्कार के पश्चात मुझे नौकरी दे दी। मैंने 16 दिसंबर, 1959 को स्वतंत्र पार्टी के केंद्रीय कार्यालय के कार्यालय-

सचिव के रूप में उनके साथ पदभार ग्रहण किया। मसानी का पार्टी के कार्यालय के बारे में धारणा किसी राजनैतिक पार्टी के कार्यालय की उस पारंपरिक छवि से काफी भिन्न थी, जहां लोग निरंतर आते-जाते रहते हैं, जो दिन में देरी से खुलता है तथा आधी रात तक बंद होता है, तथा जहां कमरों में सिगरेट का धुआं रहता है और चाय एवं खाने-पीने की आपूर्ति निरंतर बनी रहती है। उनकी मुझे दी गई पहली हिदायत अत्यंत स्पष्ट थी। उन्होंने मुझसे कहा था, तथा उनके शब्द अभी भी मेरे कानों में गूंजते हैं, भले ही इस बात को कहे चालीस वर्ष से भी अधिक हो गए हैं, "राजू कृपया यह ध्यान रहे कि यह स्वतंत्रा पार्टी का केंद्रीय कार्यालय है। मैं यहां का प्रभारी हूं तथा मैं नहीं चाहूंगा कि कोई भी इसका इस्तेमाल किसी सराय के रूप में करे, भले ही वह दावा करे कि वह पार्टी का सक्रिय कार्यकर्ता है। यह किसी वाणिज्यिक कार्यालय की भांति कार्य करेगा तथा नियमित समय-घंटों का पालन करेगा। यदि मैंने यह पाया कि आप इन निर्देशों का पालन करने में असमर्थ हैं, तो आपको यहां से जाना होगा।" मैं इस बात से इतना भयभीत हो गया कि मैंने सिर्फ यही कहा, "जी हां।" केंद्रीय कार्यालय सोमवार से शुक्रवार तक नियमित कार्य-समय के लिए खुलता था अर्थात प्रात: 9 बजे से शाम 5 बजे तक तथा शनिवार को प्रात: 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक। रविवार को साप्ताहिक अवकाश हुआ करता था। तथा साथ ही सार्वजनिक अवकाशों का भी कड़ाई से पालन किया जाता था। मसानी ने एक बार चेतावनी देते हुए मुझे उस समय यह कहा था, जब मैंने बैंक के अवकाश पर कार्यालय बंद कर दिया था तथा उनका मुझसे संपर्क नहीं हो पाया था, "कृपया आप यह न समझे कि सरकार द्वारा घोषित हर अवकाश स्वत: ही केंद्रीय कार्यालय के लिए अवकाश माना जाएगा।" हालंकि इस गलती के कारण मुझे लाभ ही हुआ। वे मुझसे संपर्क नहीं कर सके थे क्योंकि मेरे निवास पर कोई फोन नहीं था। अगले दिन मुझे सख्ती से हिदायत देने के पश्चात् उन्होंने बंबई टेलीफोन के महाप्रबंधक को पत्र लिखकर मुझे प्राथमिकता के आधार पर टेलीफोन कनेक्शन देने का अनुरोध किया क्योंकि कार्यालय समय के बाहर मुझसे संपर्क करने में उन्हें काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था। वह टेलीफोन मेरे निवास पर ठीक 48 घंटे के भीतर लग गया।(51) वे एक उत्कृष्ट प्रशिक्षक भी थे। उन्होंने मुझे कार्यालय

प्रणालियों में पारंगत बनाया। उन्होंने मुझे सिखाया कि अच्छी अंग्रेजी कैसे लिखी तथा बोली जाती है।

केंद्रीय कार्यालय केवल एक ही व्यक्ति से शुरू होता था, और वह था मैं। एक चपरासी रखने का मेरा अनुरोध तत्काल ही ठुकरा दिया गया। यह एक ऐसी आदत है जो भारत में ही प्रचलन में है, और कहीं नहीं मसानी ने मुझे बताया कि अन्य देशों में तथा यहां तक कि भारत में विदेशी कंपनियों में, अधिकारी तथा कार्यपालक अपनी चाय स्वयं बनाते हैं तथा ऐसे सैकड़ों कार्य खुद करते हैं, जिनके लिए यहां चपरासी को करने के लिए बुलाया जाता है। मुझे अंतत: एक चपरासी मिल गया, परंतु काफी विरोध के पश्चात्। फिर मैंने एक स्टेनोग्राफर की मांग की तथा फिर मुझे नकारात्मक उत्तर मिला। क्या तुम्हें टाइपिंग नहीं आती? तुम स्टेनोग्राफर क्यों रखना चाहते हो? मुझे केवल तभी एक स्टेनोग्राफर मिल पाया जब मसानी ने मुझे कागजों के भीतर लदा हुआ पाया तथा मैं उनकी कार्य-क्षमता के अनुसार कार्य करने में सफल नहीं हो पा रहा था। जहां तक मुझे याद है, मुझे आवश्यक हर व्यक्ति तथा उपकरण को पाने के लिए मुझे उनसे झगड़ा करना पड़ा। यह बात समझ में आ सकती है क्योंकि उनके पास धन राशि कभी भी अधिक नहीं रही तथा वे व्यय की कटौती पर विशेष ध्यान रखते थे। परंतु मुझे लगता है कि वहां धन का अभाव खास वजह नहीं थी, क्योंकि यह तो बारहमासी बनी रहने वाली समस्या थी, बल्कि यह इस बात पर निर्भर करता था कि कितनी गंभीरता के साथ मैं अपनी मांग प्रस्तुत करता हूं। यदि मैं अपनी बात पर अडिग रहता, तो वे उसे मान लेते। यदि मैं ऐसा नहीं करता, तो उन्होंने कहा, "मैं जानता हूं कि वह बिना इसके कार्य कर लेंगे।" वे एक अत्यंत सख्त कार्यापालक थे तथा एक अत्यंत अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे, जैसा मैंने उनके साथ किए गए कार्य के अनेक वर्षों के दौरान अनुभव किया।

मसानी पार्टी की विचारधारा के प्रति समर्पित तथा संगठन की महारत हासिल किए हुए व्यक्ति का एक दुर्लभ संयोजन थे। वे अच्छी तरह से जानते थे कि स्वतंत्रा पार्टी का उद्देश्य क्या है तथा वे उन उद्देश्यों की पूत के लिए पार्टी को संगठित करते थे। इसका अर्थ हमे उस बात से पता चलता है जो उन्होंने अपनी जीवनी में लिखा है, "बेहतर हाउसकीपिंग तथा कार्यकुशल क्षेत्रीय संगठन।"

पहले बीस वर्षों अथवा अधिकतर कांग्रेस न केवल दिल्ली में सत्ता में थी बल्कि केरल और पश्चिम बंगाल रायों को छोड़कर अधिकांश रायों में भी इसका बोलबाला था। इस बात ने ही मसानी को एक उच्च केंद्रीयकृत पार्टी चलाने के लिए प्रभावित किया। उनका उद्देश्य दिल्ली था, न कि अन्य राज्य क्योंकि सत्ता का केंद्र दिल्ली ही था, अन्य राज्यों में नहीं, जिसका वर्णन राजाजी ने "उत्कृष्ट नगरपालिकाओं के रूप में किया था।" दुर्भायवश, यही कार्यनीति उन्हें प्राय: राज्य के नेतृत्व के साथ सीधे विवादों में ला देती थी। नीति के वक्तव्य को "स्वतंत्रता के माध्यम से समृद्धि" का शीर्षक दिया गया था, जो ल्यूडविग एर्हाड्स के "प्रतिस्पर्धा के माध्यम से समृध्दि" से तैयार किया गया था। इसका संविधान संक्षिप्त तथा सभी द्वारा क्रियान्वित किए जाने के योग्य था और इसमें किसी भी प्रकार की उलझन नहीं थी। दोनों ही के प्रारंभिक मसौदे मसानी द्वारा बनाए गए थे। नीति के वक्तव्य के मसौदे को काफी पहले सभी के द्वारा परिचालित किया गया था तथा इसमें संशोधन आमंत्रित किए गए थे। संशोधनों को प्रासंगिक पैराग्राफों के सामने रख गया था, जिससे कि उन पर चर्चा किए जाने का आधार बन सके। यह सभी कार्य अत्यंत व्यवस्थित ढंग से किया गया था। जब समितियों और परिषदों की बैठकें आयोजित होती थीं, तो वे एक अत्यंत कुशल प्रबंधक बन जाते थे।(52) पार्टी की आम परिषद, जिसकी बैठक पटना में मार्च 1960 में सम्मेलन की पूर्व संध्या पर आयोजित की गई थी, ने संशोधनों पर विचार किया तथा सम्मेलन के अनुमोदन के लिए अंतिम मसौदा तैयार किया गया। इस समस्त प्रक्रिया की समाप्ति पर जो भी उभरकर सामने आया, वह अत्यंत प्रभावी दस्तावेज था जिसमें व्यक्ति-विशेष की प्रधानता पर बल दिया गया था।

वर्ष 1959 से 1967 तक पार्टी के महासचिव के रूप में, वे बहुत ही प्रभावी बने रहे, हालांकि उन्हें अधिक पसंद नहीं किया जाता था। यह पार्टी दस वर्ष से भी कम समय में बहुत तेजी से विकसित हुई तथा लोकसभा में विपक्ष की सबसे बड़ी एकल पार्टी बनकर उभरी जिसमें 44 सदस्य थे तथा इसने उड़ीसा में सैद्धांतिक रूप से बनी गठबंधन सरकार (1967-1971) का भी नेतृत्व किया, यह राजस्थान और गुजरात विधानसभाओं में अधिकारिक रूप से मान्यता प्राप्त विपक्ष बनकर उभरी; तथा आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु विधानसभाओं में भी इसका उल्लेखनीय प्रतिनिधित्व था।

पार्टी के विचारक के रूप में, उन्हें यह बात स्पष्ट थी कि स्वतंत्र पार्टी को विरोध के असंसदीय तरीकों से दूर रहना चाहिए जैसे सत्याग्रह मोर्चाबंदी, बंद और सदन से वाकआउट। वे यह सुनिश्चित करने के लिए काफी सचेत थे कि पार्टी ट्रेड यूनियनों तथा छात्र आंदोलनों में अपने मोर्चे स्थापित न करे। गांधीजी का यह उपदेश कि 'अंत साधन को औचित्यपूर्ण नहीं ठहराता है' एक ऐसा सिद्धांत था, जिसका उन्होंने हमेशा से ही पालन किया हालांकि इसका अर्थ प्रत्यावर्तन था। गांधीजी एक अन्य उपदेश, जिसका उन्होंने बड़ी निष्ठा के साथ पालन किया, और लगभग अंधानुकरण किया, वह था कम-बुराई के विकल्प का त्याग। एक बुराई सदा बुराई ही होती है। उनके अनुसार कम-बुराई जैसी कोई चीज नहीं होती। इसके विपरीत यह कभी-कभी स्थिति को और भी बदतर बना देती है। संभवत: यह उनका अनुशासन के संबंध में प्रण था तथा सही कार्य ही करने का निश्चय था जिसके परिणामस्वरूप पार्टी चुनावी राजनीति से बाहर हो गई।

अध्यक्ष

1968 में, वे स्वतंत्रता पार्टी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उन्होंने स्वयं के आकलन को भुला दिया था कि वे हमेशा से दूसरे स्थान पर रहने वाले व्यक्ति रहे हैं क्योंकि उनमें उन गुणों का अभाव है, जो भारतीय परिवेश में आवश्यक होते हैं। जिन्होंने महासचिव के रूप में उनक स्थान लिया उनमें पार्टी का प्रबंध करने की योयता और सक्षमता नहीं थी क्योंकि महासचिव का कार्य होता ही इतना कठिन है। यहां तक कि जिस व्यक्ति ने उनके पद पर अध्यक्ष का स्थान हासिल किया था उसमें दृष्टिकोण और योयता का अभाव था। मैं पार्टी के पतन के लिए उनके उस निर्णय को उत्तरदायी मानता हूं, जब उन्होंने इसका अध्यक्षीय पद स्वीकार किया, हालांकि इसका तात्कालिक कारण लोकसभा के वर्ष 1971 में हुए चुनावों में पार्टी के घटिया-प्रदर्शन को दिया जाता है।

राजनीति से संन्यास

वर्ष 1971 में, तथाकथित "भारतीय लहर" ने स्वतंत्रता पार्टी सहित सभी पाटयों को बहा दिया। उन्होंने पार्टी के दयनीय प्रदर्शन के लिए जिम्मेदारी ग्रहण कर ली (वे स्वयं लोकसभा में राजकोट से तीसरी बार अपनी सीट बचा पाने में असफल रहे) तथा उन्होंने पार्टी के अध्यक्ष पद से और

दलगत राजनीति से त्याग-पत्र दे दिया, जो कि सक्रिय राजनीति से उनकी तीसरी और अंतिम सेवानिवृत्ति थी।

परंतु इस सेवानिवृत्ति का अर्थ यह नहीं था कि उन्होंने संन्यास ले लिया था। इसके स्थान पर वे और भी सक्रिय नागरिक हो गए। आरंभिक पैराग्राफों में मैंने उल्लेख किया था कि वे "खोए हुए अवसरों के नेता" थे हालांकि यह बात हल्की प्रतीत होती है, इसने उनके भीतर से उनके राजनीतिक गतिविधियों की अवधि से भी अधिक तेजी के साथ एक उदारवादी प्रकृति को बाहर निकाल दिया। जब वे समझे थे कि परिस्थितियां सही नहीं जा रही हैं तथा जहां व्यक्ति की स्वतंत्रता और गरिमा खतरे में है, तो वे उस दशा में चुप नहीं बैठ सकते थे। इस निबंध के अंत में उन संगठनों की सूची दी गई है, जिनकी उन्होंने स्थापना की थी तथा जो अभी तक कार्य कर रहे हैं । ऐसे अनेक संगठन और भी हैं, जो समय के साथ समाप्त हो गए क्योंकि उनके बने रहने का कारण शेष नहीं बचा था।

जब हम 10 जून, 1998 को आयोजित एक सभा में मसानी के निधन पर शोक व्यक्त करके बाहर निकल रहे थे, उनके पुत्र ज़रीर ने मुझसे पूछा कि मैं किस प्रकार मीनू मसानी के साथ इतने दीर्घकालिक संबंध स्थापित रख सका। मैंने उत्तर दिया कि ऐसी उनके पिता के कारण ही संभव हो सका।

मसानी के साथ लंबे समय तक निभा पाना कोई आसान बात नहीं थी। मैं ऐसा कर सका क्योंकि मैं उनकी कुछ विशेषताओं का प्रशंसक था, ऐसी विशेषताएं जो उन दिनों बत दुर्लभ थीं तथा आज भी दुर्लभ बनी हुई है। मसानी की बहुत-सी विशेषताएं राजाजी के समान थी।(55) हालांकि उनकी अन्य विशेषताएं एक-दूसरे से बिलकुल भिन्न थी।

सार्वजनिक जीवन में मूल्यों की प्राथमिकता उनमें से एक थी। एक अन्य विशेषता थी एक चिकित्सीय दृष्टि से तर्कसम्मत मस्तिष्क, संवेदनाओं का अभाव, जिसके परिणामस्वरूप विचारों की स्पष्टता उभरकर आती थी। इन सभी बातों ने उन्हें घटनाओं को पूर्व में देखने की नैसर्गिक क्षमता तथा पूर्ण अखंडता प्रदान की थी। वे दोनों व्यक्ति अच्छे तालमेल के साथ आगे बढ़े।

मैंने मसानी के साथ यह समस्या अवश्य देखी कि उनमें लचीलापन प्रदान करने की असमर्थता थी, हालांकि तब भी जब ऐसे लचीलेपन से उनके सिद्धांतों के प्रभावित होने की गुंजाइश भी विद्यमान नहीं होती थी। उन्हें गैर-महत्वपूर्ण मामलों को भी सिद्धांतों के मामलों में परिवर्तित करने की आदत थी। समय की पाबंदी के लिए उनकी संवेदनशीलता तथा उनसे पूर्व-अनुमति लेकर ही उनसे भेंट करने का उनका कट्टरपन इस बात के उदाहरण हैं। वर्ष 1968 अथवा 1969 के आस-पास, जब मसानी संसद सदस्य थे और राजकोट संसदीय निर्वाचन-क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे, तथा मैं स्वतंत्रता पार्टी के राष्ट्रीय मुख्यालय के कार्यकारी सचिव के रूप में कार्यरत था, राजकोट निर्वाचन-क्षेत्र के एक प्रखंड धोराजी से एक अधेड़ आयु का किसान मेरे कमरे में आया तथा मुझसे गुजराती में कहा कि उन्हें मीनूभाई के दर्शन करने हैं। मैंने मसानी को फोन किया, जिनका कार्यालय सड़क के उस पार था तथा उनसे कहा कि क्या वे राजकोट के निर्वाचन क्षेत्र से आए अपने एक मुलाकाती के लिए कुछ समय निकाल सकते हैं, जो उनके 'दर्शन' करने के लिए धारोजी से आया है। मसानी ने मुझे पूछा, "क्या उसने मुझसे मिलने का समय लिया है?" मैंने कहा, "नहीं, उसने ऐसा कोई समय नहीं लिया है।" मसानी ने कहा, "नहीं, मैं उनसे नहीं मिल सकता।" मैंने फोन नीचे रख दिया, उस किसान को लेकर सड़क पार की तथा उनके कार्यालय में गया। मसानी के सचिव ने मुझे बताया कि वे अकेले हैं, मैं उस किसान को लेकर उनके कमरे में चला गया। किसान ने उनके दर्शन कर लिए। मसानी बहुत ही प्रसन्न दिखाई दिए तथा उन्होंने किसान को यह महसूस कराया कि वह उनके लिए कितना महत्वपूर्ण है। किसान मसानी को इस बात के लिए धन्यवाद देने आया था कि उन्होंने उनके गांव की ओर जाने वाली रेलवे लाइन पर कर्मचारी वाली लेवल-क्रॉसिंग का निर्माण करने के लिए रेलवे अधिकारियों के साथ मामला उठाया था। इससे अनेक भैंसों के जीवन की रक्षा हुई जो अन्यथा उस ट्रैक पर चली जाती थीं, तथा तेज गति से आने वाली रेलगाड़ियों के नीचे कुचली जाती थीं। यह सारी बैठक बमुश्किल दस मिनट चली। जब हम जा रहे थे, तो मसानी ने उस किसान से विदा ली तथा मुझे एक मिनट रुकने के लिए कहा। उन्होंने अनुशासन भंग करने के लिए मुझे खूब खरी-खोटी सुनाई। मैंने उनकी बात का बुरा नहीं माना क्योंकि मेरा काम हो गया था तथा किसान की बंबई यात्रा व्यर्थ नहीं गई थी।

भारतीय मस्तिष्कों तथा हिंदू विशेषताओं पर मसानी

ऐसी कुछ विशेषतएं थीं, जिनको वे कभी भी सहजता से नहीं लिया करते थे। वे कभी भी यह समझ न सके कि कोई भी भारतीय सहमति में अपना सिर क्यों हिलाता है, भले ही वह उस बात से असमहत है। उन्हें इस विशेषता से तब दो-चार होना पड़ा, जब वे सीएसपी के सचिव के रूप में उत्तर प्रदेश गए थे तथा उन्होंने कुछ प्रस्ताव पेश किए, जिन्हें "वहां उपस्थित लोगों ने सिर हिलाकर और जुबानी तौर पर सहमति दी। मैं उनकी प्रक्रिया से बहुत प्रसन्न हुआ" मसानी ने अपनी जीवनी में उल्लेख किया है।" परेशानी तब हुई, जब मैं वापस बंबई में अपने मुख्यालय आया, तो मैंने यह पाया कि मेरे प्रस्तावों का क्रियान्वयन बिलकुल भी नहीं किया गया है... तब मेरे मित्रों ने मुझे ज्ञान दिया। उन्होंने मुझे बताया कि उत्तर भारत में, विशेष रूप से सुसंस्कृत लोगों के बीच, कोई भी व्यक्ति किसी की बात का खंडन नहीं करता है और न उसे कहता है कि वह गलत है। मेरे उत्तर प्रदेश के मित्र वस्तुत: मेरी बातों से कभी भी सहमत नहीं हुए परंतु वे इतने विनम्र थे कि उन्होंने कभी ऐसा कहा भी नहीं। लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स तथा ब्रिटिश लेबर पार्टी के एक छात्र के लिए यह मानो एक बड़े झटके के समान था। मेरे प्रस्तावों के बारे में असहमति व्यक्त करने में क्या हर्ज है? यह एक ऐसी अभिवृत्ति है जिसे मैं कभी भी ग्रहण नहीं कर सकता हूं। पर अन्य लोगों की भांति, अंत में, मुझे इसके साथ रहना सीखना है।"(54) मुझे आश्चर्य है कि क्या मसानी वास्तव में इस आदत के साथ जीना सीख गए थे। यह घटना वर्ष 1934 में घटित हुई थी। तीस वर्ष बाद भी मैं उनसे वही रटी-रटाई टिप्पणियां सुन रहा था। वे कभी भी "इस विशिष्ट भारतीय विशेषता" के अभ्यस्त नहीं हुए।"

एक अन्य भारतीय अथवा "हिंदू विशेषता" जैसा कि वे इसे कहा करते थे, तथा जो उन्हें खींझ पहुंचाने में कभी भी नहीं चूकी, वह यह थी कि भारतीय किसी भी मुद्दे पर कोई स्पष्ट सब लेने में असमर्थ नहीं होते हैं। "क्या भारतीय मस्तिष्क पारंपरिक रूप से विश्व के अन्य लोगों की तुलना में अधिक बोलीगत होते हैं? क्या यह ऐसे दर्शन का प्रतिबिंब हैं कि कुछ भी काला या सफेद नहीं है, परंतु हर चीज अलग ही भूरे रंग की है, कि प्रश्न के प्रत्येक पहलू पर बोलने के लिए कुछ-न-कुछ है, कि प्रश्न हमेशा ही 'हां' या 'ना' में उत्तर की अपेक्षा नहीं करते तथा यह कि "शायद", "हो

सकता है" अधिकांश प्रश्नों के श्रेष्ठ उत्तर हैं? इसके उदाहरण के तौर पर मसानी ने एक ऐसी घटना का उदाहरण देते हैं जिसमें जवाहरलाल नेहरू शामिल थे। "जवाहर लाल नेहरू ने एक बार बताया कि स्वतंत्रतला के ठीक पश्चात वे वाशिंगटन का दौरा करने के लिए आमंत्रण को टाल रहे थे... देखिए उन्होंने बताया, "अमेरिकी बहुत ही अद्भुत लोग होते हैं। वे चालाक नहीं होते हैं। उन्हें उत्तर के लिए 'हां' या 'नहीं' की अपेक्षा होती है।" जैसे-जैसे समय बीता मुझ्से यह बात समझ् में आने लगी कि संभवत: गुट-निरपेक्ष की नीति को भारतीय मस्तिष्क की इस विशिष्ट विशेषता के कारण औचित्यसम्मत किया जाएगा।"(55)

जब सीपीआई सीएसपी पर कब्जा करने का प्रयास कर रही थी, तब साम्यवादियों ने मसानी पर आक्रमण करने के लिए उन्हीं का चयन कर लिया। जेपी ने सीपीआई के सचिव पी.सी. जोशी से पूछा, "आप मसानी पर ही आक्रमण क्यों कर रहे हैं, जबकि आपने हम सभी को इससे छोड़ रखा है।" जोशी का उत्तर बहुत छोटा और सटीक था, "आप बाकि लोग हिंदू हैं और हम लोग आपका ध्यान रख सकते हैं, परंतु मसानी एक अंग्रेज हैं।" मसानी के बाद में उनकी बात की व्याख्या की, "वे समझते हैं कि सीएसपी के नेतृत्व में मुझे अकेले ही पश्चिमी विश्व की संगठनात्मक सक्षमता हासिल है। एक बार वे मुझे समाप्त कर देंगे तो पार्टी पर उनका कब्जा आसानी से हो जाएगा।"(56)

अपने पिता की ही भांति, मसानी को गुस्सा बत आता था, जिसने अनेक को डरा दिया था। प्रारंभ में उन्होंने मुझ्े भी भयभीत किया, परंतु उनके निजी सचिव ने, जो कार्यकुशलता और सक्षमता में उनके ही समान कुशल थे, मुझ्े बताया कि चिंता करने की कोई बात नहीं है। आप अगर समझ्ते हैं कि आप सही हैं, तो अपने पक्ष पर अडिग रहें। मैंने ठीक वही किया और यह पाया कि वे उन लोगों का सम्मान करते थे जो उनसे नाहक भयभीत होने से इनकार कर देते थे और अपनी बात के सच्चे थे। वस्तुत: यही एक कारण थ कि हमारा संबंध बहुत देर तक चला और तभी टूटा जब 1998 में उनका निधन हुआ।

वे एक ऐसे उदारवादी थे, जिन्होंने कभी भी प्रतिरोधी विचारों का दमन नहीं किया (यदि वे किसी बैठक अथवा चर्चा की अध्यक्षता कर रहे होते थे, तो वे यह सुनिश्चित करते थे, जो भी कोई बोलना चाहता है, उसे बोलने का मौका मिले), उन्होंने अपना कार्यालय तथा सचिवालय बत ही दृढ़ संकल्प के साथ चलाना तथा वे किसी अन्य धारणा पर विश्वास करने के प्रति इच्छुक नहीं थे। लीचला बनने की उनकी पुरानी असमर्थता, ऐसी स्थिति में भी जब सिध्दांतों का उल्लंघन न भी होता था, उनकी भूरी (गलत) चीज को स्वीकार न करने की आदत से उत्पन्न हुई थी। उनके अनुसार या तो चीज सफेद है अथवा काली।

ऐसे कारण बताकर उनकी सेवानिवृत्ति की घोषणा, जो कि किसी को भी आश्वस्त करने वाले प्रतीत नहीं होते हैं, यह दर्शाता है कि संघर्ष करने की समर्थता उनमें कम थी। वे सीएसपी में रह सकते थे तथा अपनी प्रतिबध्दता को पूरा करने के लिए और अधिक मेहनत कर सकते थे। परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसके स्थान पर उन्होंने त्याग-पत्र दे दिया। उन्होंने सीएसपी नहीं छोड़ी क्योंकि वे समाजवाद पर विश्वास नहीं करते थे। यह स्थिति तो बाद में आनी थी। उन्होंने साम्यवादियों के साथ संयुक्त मोर्चा जारी रखने के अपनी पार्टी के निर्णय के विरोध के तौर पर त्याग-पत्र दे दिया था। उन्होंने सीएसपी के प्राथमिक सदस्यता के इस्तीफा दे दिया था क्योंकि पार्टी ने ब्रिटिश के युध्द प्रयासों को समर्थन देने का निर्णय लिया था, जिस पर साम्यवादियों का प्रभाव था। दोनों अवसरों पर उन्होंने वहां रहना उचित नहीं समझ और संघर्ष नहीं किया परंतु सेवानिवृत्ति ग्रहण कर ली।

एक वैयक्तिक आकलन

जब स्वतंत्रता पार्टी की वर्ष 1971 के निर्वाचन में हार हो गई, तो उन्होंने न केवल अध्यक्ष पद छोड़ दिया, बल्कि दलगत राजनीति भी छोड़ दी। मेरे पास इस घटना की दर्दभरी यादें हैं हममें से अनेकों ने उन्हें त्याग-पत्र न देने के लिए बत मनाया। राजाजी ने मुझे एक पत्र भेजा तथा मुझसे कहा कि मैं उनकी राय को मसानी को संप्रेषित करूं तथा अपनी मनाने की शक्ति का प्रयोग उन्हें पद पर बने रहने के लिए करूं, कम-से-कम आगामी दो वर्ष तक, जब तक पार्टी हार के सदमे से उबर जाएग। मसानी अपनी बात पर अड़िगत थे। उन्होंने महा परिषद के सदस्य कर्नल एच.आर.

पसरीचा के साथ निरर्थक बहस की कि स्वतंत्र पार्टी ने एक युध्द हार दिया है, एक लड़ाई नहीं। अब कर्नल पसरीचा की उन्हें समझने की बारी थी, जिसे हममें से अनेक ने समर्थन दिया था, कि 1971 के चुनावों ने स्वतंत्रता पार्टी की समाप्ति का उद्घोष नहीं किया तथा हमने केवल एक लड़ाई में हार देखी है तथा अब हम पुन:संगठित होंगे तथा संघर्ष करेंगे। यह 'घातक चूक' संभवत: इस तथ्य के लिए उत्तरदायी है कि उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान तथा उसके बाद उसके उत्कृष्ट रिकार्ड के बावजूद भारत की राष्ट्रीय हस्तियों में शुभार नहीं किया जाता है।

उनका एक अन्य दोष था, उनकी अन्य लोगों को अपने समान सक्षम न समझने की असमर्थता। लोगों के बारे में उनके निर्णय भी कहीं अधिक सत्य नहीं होते थे। सीधी बात तथा सजीला व्यक्तित्व उन्हें आसानी से प्रभावित कर लेता था। एक अच्छी तरह से सजा-संवरा व्यक्ति अपने धारा प्रवाह बात के साथ उन्हें पूरी तरह से प्रभावित कर लेता था।

परंतु ये सभी बातें उनकी अत्यंत उत्कृष्ट विशेषताओं से ढक गई थीं। उनका बौद्धिक एकीकरण एक थी तथा किसी को मानने का धैर्य दूसरी विशेषता थी। वे अपकर्षी होने की दृष्टि से भ्रष्ट नहीं थे तथा ईमानदार थे। इन सभी से ऊपर, वे पद का लालच नहीं करते थे।

जनता पार्टी सरकार ने मसानी को अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया। उन्होंने तत्कालीन ही यह पद स्वीकार कर लिया और ईमानदारी के साथ कार्य करना शुरू कर दिया था। परंतु वे चाहते थे कि आयोग को सांविधिक मान्यता प्रदान की जाए तथा वह उस समय विद्यमान सरकार की बजाए संसद के प्रति उत्तरदार हो। उन्होंने यह मांग भी की कि आयोग के अध्यक्ष को मंत्रिमंडल के मंत्री का दर्जा दिया जाना चाहिए ताकि वह प्रभावी हो सके। यदि ऐसा नहीं किया गया, मसानी ने चेतावनी दी, तो आयोग एक शक्तिहीन निकाय बनकर रह जाएगा और वह अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करने में समर्थ नहीं रह जाएगा। ये दोनों ही सुझव मोरारजी देसाई द्वारा अस्वीकृत कर दिए गए, जो कि उस समय प्रधानमंत्री थे।

मसानी ने त्याग पत्र दे दिया तथा वे बंबई लौट लाए। उनके बारे में अशोभनीय टिप्पणियां की गईं, जिनमें आयोग के सदस्यों द्वारा ही की गईं टिप्पणियां भी शामिल थीं, जो ह्णेस में छाई रही जिनमें यह कहा गया था कि मसानी इसलिए नाराज हो गए कि उन्हें मंत्रिमंडल का दर्जा नहीं

दिया गया और इसी कारण उन्होंने त्याग-पत्र दे दिया। मसानी का डर बहुत ही सच्चा प्रतीत हुआ। अल्पसंख्यक आयोग आज ऐसा निकाय बनकर रह गया है, जिसे कोई भी गंभीरता से नहीं लेता है।

उनमें सही बात को लेकर जवाहर लाल नेहरू के सामने भी डटकर खड़े होने का साहस था, हालांकि इससे उन्हें संभावित उच्च पद मिलने से रह गया। वे जिसमें विश्वास करते थे, तथा ऐसी स्थिति में जहां अनुभवजन्य साक्ष्य पर आधारित धारणाओं को इनकार करने का मामला बनता हो, के बीच समझैता करने के लिए तैयार नहीं थे। यह बात भी थी कि उनके रास्तों में आई अनेक बाधाओं के बावजूद अपने सिध्दांतों से समझैता किए बिना वे सफलता से भागे बढ़ते चले गए, लेकिन यह उनकी एक असफलता मानी जा सकती है। परंतु पद का संतुलित आकर्षण उनके दोषों में से एक नहीं है।

मसानी एक "पैदाइशी उदारवादी" नहीं थे। वे उदारवाद में शामिल हो गए थे। यह मार्ग काफी कंटीला तथा हताश कर देने वाला था। समाजवाद से उदारवाद तक की यात्रा बत आसान नहीं थी। परंतु वे अपने कुछ शत्रुओं को परास्त होते देखने के लिए जीवित रहे। शत्रुओं से मेरा तात्पर्य लोगों से नहीं है। मैं विचारों, अवधारणाओं तथा उनकी भौतिक अभिव्यक्तियों की बात कर रहा हूं। सोवियत साम्राज्य के नष्ट होने तथा इसी के साथ अंतरराष्ट्रीय साम्यवाद की समाप्ति को भी उन्होंने देखा। उन्होंने राज नियंत्रणवाद का पतन तथा मुक्त बाजार का उद्भव और उससे भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण बात वैश्वीकरण को भी देखा क्योंकि मसानी एक अंतरराष्ट्रीयवादी थे और राष्ट्रीय अंधभक्ति के अत्यधिक विरोधी थे।

फ्रिट्स बोल्केस्टेन, जो कि हॉलैंड के एक प्रख्यात उदारवादी थे तथा वर्तमान में यूरोपीय संघ में एक उच्च पद धारण किए ए थे द्वारा लिए गए एक साक्षात्कार में मसानी ने ब्रिटिश के बारे में एक प्रश्न के उत्तर में कहा, "जब वे लोग भारत में थे, मैं राष्ट्रवाद के आधार पर उनका बहुत विरोध किया करता था। मैं तीन बार ब्रिटिश की जेलों में गया। मैंने बिना किसी आपत्ति के गांधी जी का समर्थन किया। मैं स्वतंत्रता चाहता र्था परंतु जब हमें यह मिली, तो मैंने यह देखा कि

राष्ट्रवाद का अब कोई अर्थ नहीं रह गय है क्योंकि इसका उद्देश्य पूरा हो गया था। अत: मैंने एक वैश्विक दृष्टिकोण विकसित कर लिया।

ये मसानी थे, जो परिस्थितियों को बदलने के लिए अपनी सोच को निरंतर विकसित किया करते थे तथा उसे अनुकूल बनाते रहते थे। जो बात निरंतर बनी रही, वह उनके मूल्यों की प्रणाली थी।

इस लेख का उद्देश्य मीनू मसानी के जीवनवृत्त का वर्णन करना नहीं है और न ही यह उस सभी वृत्तांतों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है, जो उन्होंने सार्वजनिक जीवन में कारित किए थे। मैंने जो भी करने का प्रयास किया है, वह यह है कि मैं मसानी की मार्क्सवाद से लेकर लोकतांत्रिक समाजवाद तक तथा वहां से उदारवाद तक की यात्रा का अनुसरण करूं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि आप इन दोनों के अवशेष इसमें पाएंगे जैसे कि आपने इस वर्णन को पढ़ते हुए पाया होगा।

मैं इस निबंध की समाप्ति मसानी के ही एक उध्दरण से कर रहा हूं, जो इस बात का सटीक वर्णन करेगा कि वे अपने जीवन के मिशन को किस प्रकार देखते थेः

"मैं यह समझता हूं कि आदमी सामाजिक प्रयोगों के लिए मात्र कच्चा माल नहीं है परंतु वह स्वयं में एक अंत है, तथा मानवीय मस्तिष्क की एक स्वतंत्र जांच समस्त जांच समस्त प्रगति का आधार है... जैसा कि मुझे एच.वी. वेल्स से सीखना पड़ा था "मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि मैं एक निश्चित समय पर समस्त मानव-जाति के विरुद्ध एक ही अल्पसंख्यक हूं, परंतु एक लंबी दौड़ में, मैं सत्य का दामन थामता हूं तो मैं जीतता हूं और यदि मैं ऐसा करने में असफल रहता हूं, तो मैंने अपना श्रेष्ठ प्रयास किया है।"(58)

टिप्पणियां और संदर्भ

1. मद्रास का नाम अब चेन्नई हो गया है।

2. बंबई का नाम अब मुंबई हो गया है

3. सर रुस्तम मसानी द्वारा लिखी गई पुस्तकों में दि रिलीजन ऑफ दि गुड लाइफ, ब्रिटेन इन इंडिया तथा उनकी दादाभाई नौरोजीके प्राधिकृत जीवनी है, जिसका भारत सरकार के प्रकाशन प्रभाग द्वारा अपनी सीरीज मेकर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया में पुन: प्रकाशन किया गया था, प्रमुख रूप

से उल्लेखनीय हैं। सर रुस्तम मसानी के बारे में अधिक जानने के लिए बी.के. कराञ्जिया की जीवनी रुस्तम मसानीः पोर्ट्रेट ऑफ ए सिटीजन।

4. सर फिरोजशाह मेहता, एक प्रकार से, बंबई नगर निगम के संस्थापक थे तथा सर रुस्तम मसानी इसके सचिव थे और बाद में इसके आयुक्त बने। बी.के. कराञ्जिया की जीवनी उनके इस संबंध पर विस्तार से प्रकाश डालती है।

5. मीनू मसानी, ब्लिस वाज इट इन दैट डॉन पृष्ठ 18 आर्नल्ड हीनेमैन, एवी-9, सफदरजंग एंक्लेव, नई दिल्ली-110016, 1977.

6. तदैव, पृष्ठ 18,

7. तदैव, पृष्ठ 24.

8. तदैव

9. मेनन को ऐसे पहले भारतीय मंत्री होने का श्रेय प्राप्त है जो स्वतंत्र भारत में पहले घोटाले में शामिल थे, जो सेना की आपूर्ति से संबंधित था। "जीप घोटाले" के नाम से मशहूर यह घोटाला आज भी उन बिना सुलझो मामलों में से एक है, जिसमें शक की सुइयां कृष्णा मेनन की ओर घूमती रहीं। वे उस समय लंदन में भारत के उच्चायुक्त थे। वर्ष 1948 में भारत सरकार को कश्मीर और हैदराबाद में सैन्य कार्रवाईयों के लिए 200 जीनों की आवश्यकता थी। लंदन स्थित भारतीय उच्चायोग को जीपें खरीदने के लिए कहा गया। आपूर्ति के पारंपरिक माध्यमों की अनदेखी की गई तथा इसका ठेका ई.एच. पॉटर को दिया गया जिसे 172,000 पौंड की अग्रिम राशि प्रदान की गई ताकि वे नई जीपें और साथ ही उसके उपांग भेज सकें। मार्च, 1949 में 155 जीपें मद्रास पहूंची। इनमें से कोई भी जीप सेवा योग्य नहीं थी तथा उन जीपों के साथ कोई भी उपांग नहीं था। जीनें अस्वीकार कर दी गईं तथा अग्रिम राशि को समाप्त कर दिया गया। कृष्णा मेनन इस लेन-देन के बारे में कोई संतोषजनक जवाब नहीं दे सके और उन्हें इस्तीफा देने के लिए कहा गया। उनका स्थान लेने के लिए बी.जी. खेर को भेजा गया।

10. "इंग्लैंड में, लास्की को बहुत अधिक सम्मान नहीं दिया गया जाता था, परंतु भारत तथा विदेशी शासन के अंतर्गत आने वाले अन्य देशों में उनका बहुत प्रचलन था। यह कहना अनुचित न

होगा कि जवाहर लाल नेहरू और कृष्णा मेनन से लेकर आगे की पीढ़ी तक भारतीयों की अनेक पीढ़ियां लास्की के पैरों के पास बैठा करती थीं तथा उस ज्ञान को अपने अंदर समेटती थी, जो उनके होठों तथा उनकी कलम से निकला करता था।

11. तदैव, पृष्ठ 42.

12. तदैव, पृष्ठ 42.

13. तैदव, पृष्ठ 47

14. मसानी ने लिखा: "प्रिय जवाहर लाल: हम बंबई के कुछ कांग्रेसजन, जो समाजवादी हैं, कांग्रेस समाजवादी समूह अथवा पार्टी का निर्माण करने का प्रयास कर रहे हैं। हम समझते है कि आपने सचेतन समाजवादी और साम्रायवाद विरोधी पदों को धारण करने की आवश्यकता पर बल देकर कांग्रेस और देश का जो मार्गदर्शन किया है, उसमें कांग्रेस के भीतर समाजवादियों के संगठन द्वारा अनुपालन किया जाना चाहिए। गठन के लिए प्रस्तावित समूह उन उद्देश्यों को, जो आपके विचारों में हैं, कांग्रेसजनों तथा जनता के सामने रखकर उन्हें पूरा करना है। यह एक ऐसा कार्यक्रम है जो कार्रवाई तथा उद्देश्यों में समाजवादी होगा। यह समूह विभिन्न श्रेणियों के बीच सामाजिक प्रचार करेगा तथा कांग्रेसजनों को समाजवाद को स्वीकार करने के लिए संपरिवर्तित करेगा। हम अपने कार्यकर्ताओं के बीच (और किसानों के भी) अति प्रचार करेंगे तथा साथ ही साथ उनके दैनिक संघर्षों में भी भागीदारी करेंगे। हमें यह जानकर प्रसन्नता होगी यदि ऐसे समूह के गठन को आपका अनुमोदन और सहयोग प्राप्त होगा। आपक बंधु, एम.आर. मसानी तदैव पृष्ठ 44,

15. तदैव पृ. 48

16. तदैव पृ. 55

17. तदैव पृष्ठ 50 गांधी जी एंड मसानीः ए डायलॉग ऑन सोशलिज्म पर अध्याय भी देखिए पृष्ठ 97-100 : प्रो. एन. आर. मलखानी द्वारा लिखित पुस्तक रैम्बलिंस ऐंड रेमिनीसें सेस ऑफ गांधी जी पुस्तक, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद।

18. तदैव. पृष्ठ 55

19. मीनू मसानी: वाई आई अपोज़ कम्युनिज़्म, फीनिक्स हाउस बैक ग्राउंड पेपर, 1956 पृ. 36

20. अवर इंडिया ने भारतीयों के राष्ट्रीय गौरव की अपील की तथा उसकी असहमति को अभिव्यक्ति प्रदान की। सारा का सारा दोष ब्रिटिश शासन को दे देना तथा यह कहना देना आसान है कि कभी भारत स्वतंत्र था, वहां सभी बातें ठीक से होती थीं, जैसा कि पुस्तक में लिखा गया था, वह कर दिया गया। यह पुस्तक योजना की अवधारणा को भी लोकप्रिय बनाती है। मुझे बाद में इसके इस विशेष पहलू द्वारा की गई कुछ क्षति का बहुत खेद हुआ तथा विशेष रूप से रूस में सामूहिक कृषि को प्रोत्साहित करने वाले अनुच्छेद का मुझे दुख है, जिसके लिए सामग्री मुझे मेरे सोवियत संघ के 1935 के दौरे के दौरान प्रदान की गई थी।" तदैव 157-158

21. तदैव पृ. 160

22. मीनू मसानी, सोशलिज्म रीकनसीडर्ड पृ. 45-47 (पुनर्मुद्रित संस्करण) पहली बार 1944 में पद्मा प्रकाशन, मुंबई, लक्ष्मी बिल्डिंग, सर पी.एम. रोड, मुंबई द्वारा प्रकाशित तथा प्रोजेक्ट फॉर इकोनॉमिक्स एजुकेशन, मुंबई द्वारा 186 में पुन: मुद्रित।

23. मीनू मसानी, ब्लिस वाज इट इन दैट डॉन... पृष्ठ (161)

24. मीनू मसानी, प्ली फॉण ए मिक्स्ड इकोनॉमी

25. मीनू मसानी, अगेन्स्ट द टाइड, विकास पब्लिशिंग हाउस, 2. 162

26. दि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडियाः ए शॉर्ट हिस्ट्री, लेखक एम.आर. मसानी, पृ.250 डेरेक वरशॉयल लि. लंदन, 1954

27. मीनू मसानी, अगेंस्ट द टाइड, पृ. 54, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. नई दिल्ली 1981

28. डीपीआर ने अपने अभियान में 30 से भी अधिक पुस्तक प्रकाशित किए। उनमें थे कम्युनिस्ट एक्टिविटी इन इंडिया द्वारा एस.आर. मोहनदा; हाऊ वी टुक ओवर हंगरी द्वारा मत्यस रसोकी; टु वर्ड ए कुलर डेम्रोक्रेसी द्वारा जयप्रकाश नारायण; द कम्युनिस्ट पीस अपील द्वारा फिलिप स्परैट, वाई डा ए कंट्री जो कम्युनिस्ट द्वारा जेम्स श्रुन्हम; कश्मीर, इंडिया एंड पाकिस्तान द्वारा शेख मोहम्मद अब्दुल्ला और अर्थर लाल; तथा न्यूट्रेलिम द्वारा मसानी।

29. मीनू मसानी, अगेंस्ट द टाइड, पृ. 57... ऑप मिट.

30. मीनू मसानी, अगेस्ट द टाइड, पृ. 58 ... ऑप मिट

31. एस.के. पाटिल कांग्रेस पार्टी के मुख्य निधि संग्रहक थे तथा सरदार पटेल के निष्ठावान समर्थक थे। जब मसानी लोकसभा में सांसद थे, तो वे केंद्रीय रेल मंत्री थे। वे दोनों बत ही लोकप्रिय हुए। पाटिल ने ही नेहरू के नेतृत्व में टिप्पणी की थी कि "बगरद के पेड के नीचे कुछ भी नहीं उठ सकता है।" उन्होंने साम्यवाद से इस मात्रा में दूरी बना ली थी कि अपने कुत्ते का नाम "टीटो" रख दिया था।

32. जय प्रकाश नारायण "इंसैंटिव्स टु गुडनेस" फ्रीडम फर्स्ट, सितंबर 1952, फीडम फर्स्ट में पुन: प्रकाशित, नवंबर 1979.

33. संविधान संभा में, मसानी ने मौलिक अधिकार उप-समिति तथा केंद्र के शक्तियों की उप-समिति के सदस्य के रूप में अपनी भूमिका निभाई।

34. अपना कार्य समाप्त कर लेने के पश्चात संविधान सभा में स्वयं को वर्ष 1952 के लिए निर्धारित पहले आम चुनावों तक अनंतिम संसद में संपरिवर्तित कर लिया। 1945 में निर्वाचित, भारतीय विधानसभा 1952 तक चली तथा इसने अपने आप को दो बार परिवतत किया, पहले संविधान सभा के रूप में तथा इसके बाद भारत की अनंतिम संसद के रूप में।

35. हालांकि वे वर्ष 1954 में उप-समिति की सदस्यता के लिए संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोज द्वारा पुन: निर्वाचित हुए थे, नेहरू ने इस आधार पर उनके पुन: निर्वाचन को वीटो कर दिया कि उन्हें भारत सरकार द्वारा नाम निर्दिष्ट नहीं किया गया है, और यह कि उन्होंने पहले भी अनेक वर्ष तक कार्य किया है तथा "भारत सरकार श्री मसानी को सरकार अथवा भारत के लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिए उपयुक्त प्रतिनिधि नहीं मानती है।

36. अपने कार्यभार को स्वीकार करने से पूर्व तथा संविधान सभा में अपना स्थान बनाए रखने के लिए उत्सुक होते ए उन्होंने सरदार पटेल से परामर्श किया था जिन्होंने उन्हें कार्यभार संभालने के लिए कहा तथा मसानी से वायदा किया कि जब वे वापस लौटेंगे वे (सरदार) यह सुनिश्चित करेंगे कि उन्हें उनका स्थान मिल जाए। यह वायदा सरदार ने पूरा किया।

37. जे.आर.डी. टाटा, "मीनू मसानी आइ नो हिम" फ्रीडम एंड डिसेंटएसो इन ऑनर ऑफ मीनू मसानी, ड्रेमोक्रेटिक रिसर्च सर्विस द्वारा द्वारा 1985 में प्रकाशित, पृ. 2-3

38. असहमति की टिप्पणी में कहा गया था कि क्यों प्रोफेसर शिनॉय अपने साथियों के इन विषयों पर व्यक्त किए गए दृष्टिकोणों से पूर्णत: सहमत नहीं हुए (1) योजना का आकार, (2) योजना के लिए बढते हुए वास्तविक संसाधनों के साधन के रूप में घाटे का वित्त-पोषण, तथा (3) योजना ढांचे की कतिपय योजनाएं तथा संस्थागत विविक्षाएं। सम बेसिक इकॉनामिक, आइडियाज ऑफ बी.आर. शिनॉय में पुन: मुद्रित द्वारा इकॉनामिक्स रिसर्च सेंटर, मुंबई।

39. जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्होंने कांग्रेस से त्यागपत्र देदिया है, राजाजी ने साधारण रूप से कहा, "कांग्रेस से त्यागपत्र देने का प्रश्न ही नहीं उठता। मैंने अपनी सदस्यता का नवीकरण नहीं किया है।"

40. राजाजी, स्वराज्य, 17 अगस्त, 1957

41. मीनू मसानी, अगेंस्ट दि टाइड, विकास पब्लिशिंग हाउस पृ. 101

42. तदैव, पृ. 108

43. तदैव, पृ. 118

43. तदैव, पृ. 119

44. तदैव, पृ. 119

45. तदैव, पृ. 140

47. राजाजी ने स्वराज में लिख गए एक लेख में "स्वतंत्रता" का अनुवाद "आजादी" बताया।

48. मीनू मसानी, अगेंस्ट दि टाइड, पृ. 144

49. राजाजी ने स्वतंत्रता आंदोलन में कूदन के लिए अपनी फली-फूली वकालत छोड़ दी थी तथा इससे उन्हें तथा उनके परिवार को आथक तंगी हुई (फुटनोट माइन)

50. तदैव, पृ. 144

51. उन दिनों में, एक विशेष श्रेणी के फोन कनेक्शन के लिए कम-से-कम तीन से छड महीने लगते थे तथा सामान्य आवेदक को एक वर्ष या अधिक तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी।

52. इसमें कोई आश्चर्य नहीं था। कनाडा के वी.एच. स्टैनफोर्ड तथा मसानी ने "द कंडक्ट आफ मीटिंस" नामक पुस्तक प्रकाशित की। यह कनाडाई संस्करण था। वर्ष 1965 में इस पुस्तक का भारतीय संस्करण ऑक्सफोर्ड यूनीवसटी ह्णेस द्वारा प्रकाशित किया गया तथा इसे फ्रीडम फर्स्ट फाउडेशन द्वारा 1986 में पुनर्मुद्रित किया गया।

53. ब्लिस वाज इट इन दैट डॉन पृ. 50... ऑप. सिट

54. तदैव, पृ. 50

55. तदैव, पृ. 131-132

56. फ्रिट्स बोल्कस्टेन मार्डन लिबरेलिम, एल्सेवियर पब्लीशर्स, न्यूयार्क

57. मीनू मसानी, वाई आई अपोज कम्युनिम, ए बैकग्राउंड बुक, फीनिक्स हाउस लि. लंदन द्वारा प्रकाशित, 1956

मीनू मसानी के चुनिंदा प्रकाशन

1. इंडियाज कंस्टियूशन एट वर्क (सी-वाई चिंतामणि के साथ), 1939
2. सोवियत साइडलाइट्स, 1939
3. अवर इंडिया 1939
4. सोशलिज्म रीकंसीडर्ड, 1944
5. यूअर फूड, 1944
6. पिक्चर ऑफ प्लान, 1945
7. ए प्ली फॉर ए मिक्स्ड इकॉनामी, 1947
8. अवर ग्रोइंग ह्यूमन फैमिली, 1950
9. कॉर्पोरिटिव फार्मिंग, द ग्रेट डिबेट, 1956
10. न्यूट्रिलिज्म इन इंडिया, 1951
11. द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडियाः ए शार्ट हिस्ट्री, 1954
12. कांग्रेस मिस रूल एंड स्वतंत्र अलटर्नेटिव, 167

13. टू मच पॉलीटिक्स, टू लिटिल सिटिजनशिप, 1969

14. लिबरेलिज्म (रिवाइड एंड टी-प्रिंटेड 1985), 1969

15. दि कांस्टिटयूशन, टवेंटी इअर्स लेटर, 1975

16. इज़ जेपी दि आन्सर, 1975

17. जेपी'स मिशन पार्टली एकम्प्लिशड, 1977

18. ब्लिस वाज इट इन दैट डॉन, 1977

19. अगेंस्ट दि टाइड, 1981

20. वी इंडियन, 1989